भूमिका



" धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलकारणम् । " अर्थात् आरोग्यता यानी तन्दुरस्ती ही ससारके चारों पदार्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्षको पैदा करनेवाली है, वही तन्दुरस्ती विना औषधियोंके जाने हासिल नहीं होसक्ती इसलिये सबसे पहिले औषधिका जानना सबका फर्ज है ताकि तन्दुरस्ती कायम रहे । इसवास्ते सर्वसाधारणके उपकारार्थ श्रीमान् कूर्मक्षत्रियवंशावतंस लाला खूबचन्दजी आनरेरी मजिष्ट्रटने अनेक गुणवान् साधु महात्माओंसे और अनेक ऐसे ग्रन्थोंसे जिनका पत्ता भी न था उन सबके द्वारा संग्रह करके तथा ४० वर्षतक रात्रिदिन इसीमें लगाकर जो औषधियां खास उनके इस्तेमालमें और तजर्बेमें आई और जिनका काम रात्रिदिन अपने देशमें जियादः पडताहै उनकी शोधन विधि इत्यादि हस्तक्रियासे तजर्बे. करके तरह तरहके रोगोंपर चुन चुन कर औषधियां संग्रह कीं, परन्तु प्रबल ईश्वरकी इच्छा अधीन उनके परमधाम चलेजानेसे उससमय वह ग्रन्थ मुद्रित न होसका ।

इस अनोखे संग्रहरत्नसे लोग वञ्चित न रहें यथार्थ लाभ प्राप्त करें और ग्रंथकर्ताका परिश्रम भी सफल हो यह विचार करके इसे श्रीमान् पण्डित गुमानीलालशर्म्मा वैद्यजीसे शुद्ध कराके और मुद्रित कराकर आशा करताहूँ कि सज्जन महोदय इस अमूल्य संग्रहसे लाभ प्राप्तकर मुझे अनुग्रहका पात्र बनावेंगे ।

कृपाभिलाषी,
बलदेवप्रसादवर्म्मा.

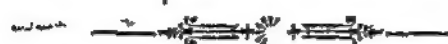
अथ खूबचन्दचिकित्साविषयानुक्रमणिका ।



इति गुलचन्द्रचिकित्साविषयानुक्रमणिका समाप्ता।

॥ श्रीः ॥

अथ
खूबचन्दचिकित्सा प्रारम्भ।



मंगलाचरण।

सुमिरि भवानी शङ्करहिं, हिय धारि चरणसनेहु।
संग्रह औषधिको कहौं, गणनायक वर देहु ॥ १ ॥
जासु नाम भव औषधी, हरण घोर त्रय शूल।
सो रघुनन्दन अवधपति, सदा रहैं अनुकूल ॥ २ ॥
नवनीरदसम श्याम, दयाधाम नीरजनयन।
बसहु सदा श्रीराम, मेरे हिय सुखमा अयन ॥ ३ ॥

इलाज बुखारका नं० १

जो बुखार जाड़ा देकर आता हो और उसमे खाँसी और कफ भी हो तो पहिले ४ चार रोज तक शिलाजीत, लौंग, सुर्ख इलायची देना चाहिये उसके बाद जूफाव-हेडा, विसौटा, गिलोय सब चीज छेछे मासे ६ का काढा निमक डालकर पिलाना चाहिये, अगर खुश्की ज्यादा करै तो बजाय निमकके शहत डालकर पिलाना चाहिये, इससेभी बुखार न जाय तो एक रत्ती सारमनसलवाला, मुनक्केमें रखकर एक घंटे पहिले खिलाना चाहिये इससे

भी नफा न होतो एक रत्ती १ मूंगेका कुस्ता और १ एक रत्ती अबरख दोनों मिलाकर पानमें रखकर खिलाना चाहिये और अगर सर्दीका जोर ज्यादा होतो रससिंदूर तथा रसमानिक तथा चंद्रोदय पान तथा अदरकके अर्कमें एक रत्ती दे और अगर दवाकी गरमी कम करना मंजूर हो तो वंशलोचन सफेद इलायची शहत तथा शरबत अनारमें मिलाकर खिलावे और अगर ताकत देनेकी जरूरत हो तब चांदीके वर्क, मोतीसत, गिलोय और मिलाना चाहिये अगर दाह होतो अंडके पत्ते पिंडोरका चौका लगाकर उसपर रखकर छातीपर रक्खे तथा कपूर, सफेदचंदनका फाया बनाकर कौडीपर थोडी देर रक्खे ।

नं० २. जो शिंगरफ अदरकके रसमें बनायागयाहै तो खाँसी, बुखार, जाडेको पानपर तथा तुलसीके पत्तेपर तथा शहदमें खिलानेसे दूर करता है इसमें मूंगेका कुस्ता भी मिलाकर दियाजाताहै ।

नं० ३. सार, मनसलवाला फक्त मुनक्का और तुलसीके पत्तेमें खिलानेसे आराम होजाताहै ।

नं० ४. गोली जिसमें कपूर, काली मिर्च, करेलेके पत्ते शामिल हैं जाड़ा बुखारको फौरन दूर करतीहै।नं० ५.पुराना अबरख ज्यादा फायदा करताहै औरअगरबुखा

रको खाँसी, कफ भीशामिल हो तव एक १ चावल पीपल ६४ चौंसठ पहरकी घुटी हुई मिलाकर खिलाना चाहिये।

नं० ६. बुखार, तिजारी, चौंथिया जो ज्यादा रोजका हो उसको २ चावल हरतालका कुस्ता वगैर मीठे कच्चे दूधके साथ देना चाहिये उस रोज सिवाय दूधके और कुछ गिजा नहीं देना चाहिये।

नं० ७. बुखारको १२ बारह रोज होगये हों और पेटमें मल मालूम हो तव जुल्लाव देना चाहिये, अगर वायु और कफका दोष ज्याद हो तव लंघन कराना चाहिये, लंघनकी हालतमें दवा कम देना चाहिये।

नं० ८. अगर कफकी ज्यादती न हो कुछ वायु शामिल हो तव जूफा, वहेडा, विसोंट, गिलोयके काढेकी जरूरत नहीं है शिलाजीतवाला काढा लौंग त्यागकर देना चाहिये, सार, मनसलवाला मुनक्केमें अवरख शहतमें देना चाहिये, अगर खुश्की ज्यादा हो तो उशीरादि काढा देना चाहिये और कासनीके पत्ते ७ पानीमें पीसकर फाड़ले, उसमें शहद तथा मिसरी तथा शरवत अनार तथा शरवत नीलोफर इसमें जो मुनासिव जाने डालकर मनसलवालासार १ एक रत्ती देना चाहिये दाह ज्यादा हो और बुखार चढा हो उस वक्त, १ एक रत्ती कुमुदेश्वर, रसमिसरी और काली मिर्च मिलाकर

शहद या शरबत अनार या शरबत नीलोफरमें देना चाहिये नागरस नं० ६४मिस्ल कुमुदेश्वर देना चाहिये।

नं० ९. और जिन लोगोंको बदफेली ज्यादा करनेसे वीर्य नहीं रहता और बुखारमें बीमार हों उनमेंसे किसी किसीको ऐसा होताहै खुश्की ज्यादा होती है बार बार गस आताहै, ताकत नहीं रहती, ऐसा ख्याल होताहै कि आखिरी वक्त है उस वक्त फौरन एक रत्ती मोती, एक वर्क चाँदी, एक रत्ती वंशलोचन एक सफेद इलायची, एक रत्ती सतगिलोय, एक रत्ती कुस्ता राँग, एक रत्ती सार मनसलवाला शहद या शरबत अनारमें मिला कर फौरन खिलावे इसके खिलातेही १५ पन्द्रह मिनटमें आराम होगा अगर देर कीजावैगी तो बचना मुश्किलहै।

नं० १० जो सन्निपात हो तो गोली संजीवनी नं० ७५ पकी अदरकके रसमें देना चाहिये तथा रस सिंदूर तथा रसमानिक तथा चन्द्रोदय अनुपान उसवक्त जैसा मुनासिब समझे उसमें दे और जो पसीना ज्यादे हो और जिस्म ठंडा हो और साँसका वेग हो उसको चन्द्रोदय नं० २८ का अदरकके रसमें देना चाहिये फौरन फायदा होगा।

नं० ११. पुराने बुखार और खाँसीमें श्रीगार अबरख,व रसमानिक व कुस्ता चुन्नी एक रत्ती अनुपान मोतदिलके साथ देना चाहिये लेकिन कुछ दिन खाना

चाहिये घी, दूधका परहेज नहीहै लेकिन दूध क्षीरपाक होना चाहिये और मकान तथा कपड़े बीमारके स्वच्छ रखना चाहिये।

नं० ११. और सिर्फ बुखारमें हिरनके सींगकी भस्म २ दो रत्ती शहदमें मिलाकर देना चाहिये आराम हो जावेगा।

नं० १२. पित्त अधिक बुखारमें पिलास ज्यादा हो १ एक सेर पानी जोश करे जब तीन पाव रहे उसमें एक तोला सत कागजी, डेढ़ छटाक मिसरी डालकर उतार ले और मिट्टीके बरतनमें रख ले ठंडा होनेपर थोड़ा थोड़ा पिलाना चाहिये प्यास बंद होजावैगी।

न० १४. कफ वातमें पिलास ज्यादा हो तब एक सेर पानीमें २५लौंग डालकर जोश करे जब तीनपाव पानी रहि जावे तब उतारकर वो पानी पिलाना चाहिये तथा पावभर पीपलका पपड़ा पानीमें बुझाकर वो पानी पिलाना चाहिये अगर शर्दीसे दाह और पिलास अंदर ज्यादा हो तब चार मासे लौंगका काढ़ा करके पिला देय।

इलाज खाँसीका नं० १.

सुश्क खाँसीमें नागरस नं०६४दो रत्ती लौकसपिस्तामें खिलाना चाहिये अनारका छुकला चारमासे, मुरेठी,

दो मासे, वेहड़ा दो मासे इनका काढ़ा करके मिसरी डालकर पिलाना चाहिये, किसीवक्त बहुत ज्यादा हो तो जवाखार शहद मिलाकर खिलावे कफ निकल जावेगा, इन सबसे न आराम होतो मिसरी, काली, मिर्च डालकर कुमेदेश्वर रस शहदमें खिलावे ।

नं० २. कफकृत खाँसीमें शिंगरफ, अदरकवाला, नं०३६ आधरत्ती पानपर रखकर खिलावे तथा अभ्रक और मूँगेकी भस्म आधी आधी रत्ती मिलाकर पानपर रखकर खिलावे तथा बहेड़ा अनारका छुकला जलाकर थोडी २ देरमें खिलावे ॥

नं०३-तथागोली खाँसी नं ६मुँहमें डाले रहे खाँसी जाती रहेगी तथा श्रींगार अवरख तथा रसमानिक तथा सार तथा पीपल ६४ पहरकी शहदमें खिलाना चाहिये तथा आककी जड़का कोयला नं० १३३-२ चावल मलाईमें रखकर खिलावे मलाई बगैर मीठेकी, अगर खुश्की करे तो दूध बगैर मीठेका पिलावे तथा आसव द्राक्षादि पिलावे इसके पिलानेसे खाँसी बिलकुल जाती रहेगी ।

नं०४.बच्चोंके बुखारकी दवा खूपकला एक पोटलीमें बाँधकर शामको कुयेके अन्दर लटका दे पीनीमें डूबी रहे सवेरेको निकालकर झाईमें सुखा ले, इसमेंसे चार

रत्ती महीन पीसकर शहदमें मिलाकर खिलावै बुखार जाता रहेगा।

नं० ५. बच्चोंकी खांसीकी दवा अतीस, नागरमोथा काकड़ासिंघी, पीपल, सब दवा बराबर पीसकर और सब दवाके बराबर मिसरी मिला कर एक अनार ऊपरसे काटकर दाने निकालकर खालीकर ले नीचे कपड़मिट्टी कर दे, उसमें सब दवाभरकर बकरीका दूध डालदे, अंगारोंपर रखकर पका ले, उसमेंसे एक एक उंगली चटावे खांसी जाती रहेगी।

नं० ६. हैजेकी दवा–हैजावालेको अजवायन चार मासे पावभर पानीमें जोश करके जब तीन पैसेभर रहे पिलादे, फिर एक घन्टे बाद इसीको पिलावै के, दस्त बंद हो जावेंगे तथा रोगनकापूर नं० १७३ दस १० बूँदसे १५ पन्द्रह बून्दतक पानीके साथ पिलावे आध आध घंटेमें जितना आराम हो उतनी दवा कम करना चाहिये तथा गोली छुदासागर, लौंगके काढ़ेके साथ खिलाना चाहिये घन्टे घन्टे भरमें अगर पिलास ज्यादा हो तब २५लौंग एकसेर,पानीमें जोश करे जब तीन पाव पानी रहि जावे तो उतारकर वह पानी पिलाना चाहिये तथा पीपलकी छाल सूखी जलाकर उसको बुझायकर वह पानी पिलाना चाहिये तथा

हैजेमें सन्निपातकी हालत होजावे तब इलाजसन्निपातकी करना चाहिये लेकिन उसके साथ दवा हाजमेकीऔर पेशाब लानेवाली शामिल रक्खे और लंघन करा दे हैजेकी बीमारीमें जबतक अच्छीतरह आराम न हो जावे तबतक खानेको नहीं देना चाहिये।

नं० ७. पेटके दर्दकी दवा पेटके दर्दवालेको गोली शूलगजकेसरी गरम पानीके साथ खिलाना चाहिये तथा कुमारासव, नकछिकनीका खोर मिलाकर पिलाना चाहिये अगर पेशाब लानेकी जरूरत हो तब जवाखार या मूलीका खार कुमारासवमें मिलाकर पिलाना चाहिये ये खुराक कुमारासव छे मासेसे दो तोलेतक खुराक खार चाररत्तीसे दो मासेतक तथा अर्क जंभीरी तथा अर्क जामन तथा मुकत्तर जामन यह भी ६ छे मासेसे दो तोले तक दर्दमें पिलानाचाहिये तथा रोगनकाफूर नं० २७३, १५ बूंद तक पानीके साथ पिलाना चाहिये तथा खार नं०गरम पानीके साथ कमदर्दकी हालतमें खिलाना चाहिये तथा रोगन नं०१६८मालिसकरना चाहिये और इनसेभी सेहत न हो तो दस्त कराना चाहिये और छाती पर दर्द हो जिसको हृदयशूल कहते हैं उसमें दो मासे हिरणके सींगका कुस्ता, दो तोले घी, आधपाव दूध

गरममें मिलाकर खानेसे हृदयशूल बन्द हो जावैगा जिस औरतको हमल हो और पेटमें दर्द हो तब कुसाकी जड़ दूधमें औटाकर पिलावै।

नं० ८. फालिजसंखियाका कुस्ता तथा हरताल तथा शिगरफ खुराक आधी रत्ती तथा रसमानिक एक रत्ती तथा तांबेका तथा सोनेका एक रत्ती यह सब दिये जा सकतेहैं, जिसका मौका देखे अनुपान हम वजन लौंग मिलाकर शहदमें देना चाहिये अगर ज्यादा जरूरत हो तब कस्तूरी भी मिलादे तथा अर्क खुरासानीअजवायनका खेंचकर १ एक तोला पिलाना चाहिये खानेको सबसे अच्छा जंगलीकबूतरका शोरवा देना चाहिये उसके बाद तीतर, बटेरका शोरवा देना चाहिये और मालिसमें रोगन लघुविषगर्भ तथा रोगन हवासल यह दोनों बहुत मुफीद हैं।

नं० ९. आतशक शीशेका कुस्ता नं० १०७ पानपर रखकर १ रत्ती खिलाना चाहिये खटाई, गुड, तेल, लाल, मिर्च नहीं खाना तथा रसकर्पूर आधरत्ती बतासेमें रख कर खिलाना चाहिये अगर बतासा गलेसे नहीं उतरे तो खांडकी छोटीसीगोली बनाकर पानीमें उसके अन्दर दवा रखकर निगल जावै दवा मुँहमें नहींलगने पावै मुँहमें लगनेसे किसी किसीको मूहा आजाता है सबको नहीं आताहै और कुष्ठभी इससे अच्छा होताहै

खानेको चनेकी रोटी और घी खाना चाहिये, मीठा और निमक नहीं खाना चाहिये ।

नं० १० कुष्ठकी दवा–रसकपूर खिलानेकी तरकीब आतशककी बीमारीपर लिखीहै तथा अंडी छीलकरएक अंडी सवेरेको खावै दूसरे दिन दो अंडी छीलकर खावै ऐसे रोज एक अंडी बढाता जावे ४० दिनतक४०अंडी करे ४१ इकतालीसवें रोज एक अंडी कम करता जावे ८० अस्सीरोजमें यह प्रयोग पूरा होगा खानेमें चनेकी रोटी और घी खावै मीठा और निमक नहीं खावै कैसाही कुष्ट हो आराम होजावेगा ।

नं०११-तिल्लीकी दवा–चरचिटेकी बाल सुखलाकर एक कोरी हांडीमें रखकर राखकरें,और राखकी बराबर सफेद खाँड मिलावे ६ छे मासे रोज सवेरेको पानीके साथ खावे थोडे रोजमें तिल्ली जाती रहेगी ।

नं० १२. खून बंदकरनेकीदवा-खून नाक,मुँह,गुदा किसी जगहसे आवे नागररस नं० ६४ शीशेका कुस्ता नं० ४७ अर्कअनार ऽ= आधपावके साथ १एकरत्ती और १ एकरत्ती वंशलोचन मिलाकरखिलानेसे फौरन बन्द होजावेगा और जो बीमार कमजोर होतो शर्बत अनारके साथ खिलावे लेकिन शर्बत अनार अच्छाहो बजारू न हो औरतके अगर खून आनेलगे वैसेही

हमलकी हालतमें खरैटीके जड़की छाल ४ चार मासे काढ़ा करके मिसरी डालकर पिलानेसे बंद होजावैगा॥

नं० १३. गठियाकी दवा-जोगराजगूगल अंडकी जडके काढ़ेके साथ खिलाना चाहिये और मामूली दरदको अंडकी जड़का काढ़ा निमक डालकर देना चाहिये और हरतालका कुस्ता २ दोचावलभर गिरगौटेके मांसके साथ खिलानेसे आराम होजावैगा तथा शिंगरफ कुचलेवाला नं० ४० शहद और एक लौंगके साथ १ एक रत्ती देनेसे गठिया और वायुके दरद दूर होंगे इसकी खुराक वक्तजरूरत २ दो रत्तीतक कर सकते हैं रोगन नं० १२९ जिसकी तरकीब रोगनके साथ लिखीहै मालिस करनेसे फौरन आराम होताहै यह रोगन गठियाकी खास दवा है जिसका हाथ पैर गठियासे सूख गया हो इस रोगनसे अच्छा होजावैगा तथारोगन लघुविषगर्भ भी फायदा करताहै और अगर सुजाककी वजेसे हुआहै तब चन्द्र-प्रभा गूगल देना चाहिये ।

नं०१४. सुजाककी दवा कुस्तासोरा १ एक रत्ती पानपर रखकर खिलाना चाहिये तथा तज ८ माशे खूपकला ८ माशे छुआरा नग १ इनको रातको मिट्टीके बरतनमें पावभर पानीमें भिगोय दे सुबहको मलकर छानकर मिसरी डालकर पीले तथा शीशेका कुस्ता

मलकर नाकके रास्ते उसको खींचे तो अव्वल छींकें आवेंगी बादमें रेजिस निकलना शुरू होजावेगी तीन रोजतक रेजिस निकलेगी और इन तीन रोजमें मूंगकी दाल रोटी खुश्क खाना चाहिये दिमाग साफ होजावैगा और सब बीमारी दिमागकी दूर होजावेगी पीनसकी भी यही दवा है।

नं० १६. कमजोरी बाह वगैरा जिसकदर कुस्तेहैं सब फायदा करतेहैं लेकिन हमारे तजरबेके रसमानिक नं० ३० कुस्ताफौलाद नं० ५४ रोगनबेल नं० १२४ यह ज्यादा फायदा करतेहैं।

नं० १७, अंजन नं० १२२ नम्बर० १९१ यह आजमायश करे हुए हैं तरकीब उनके साथ लिखीहै॥

नं० १८, दिमागकी कमजोरी और दिलके धड़कनेकी और पित्तके बुखारकी कुस्तासंग इस्व व अकीक बंसलोचन सफेद इलायचीके साथ शर्बतअनार व शर्बत नीलोफरमें खानेसे बहुत फायदा करताहै॥

नं १९, कमलबाय जिसको पीलिया भी कहते हैं और इरका भी कहतेहैं गूमेके पत्तोंका अर्क दिनमें तीन चार दफा सलाईसे आंखमें लगाना चाहिये और कडतोंबीके बीजका अर्क नाकके रास्ते नास देना चाहिये इन दोनोंसे दो रोजमें आराम होजावेगा और खानेमें कासनी फाड़कर बंसलोचन सफेद इलायची शर्बत

नीलोफर मिलाकर पिये तथा कुस्ता संग इस्व वंसलोचन सफेद इलायची शर्वत अनार व शर्वत नीलोफरमें मिलाकर खिलानेसे फायदा होजावैगा ।

नं० २०. जहर खानेसे जिसको जहरका असर होगया हो किसी किस्मका जहरहो पन्ना मणी असली पानीमें धोकर तीन चार दफे पिलाना चाहिये जहर फौरन उतर जावैगा ।

अथ सर्वधातु शोधनविधि नं० १.

पहिले तेल, मठा, गोमूत्र, कांजी, कुलथी इनमें सात सात बार बुझानेसे सर्वधातु शुद्ध होतेहैं ।

अथ गन्धक शोधनविधि नं० २.

चमचेमें घीके साथ गन्धक पिघला कर छोडता जावै दूधमें जब जरदी दूर हो जावै तब शुद्ध होगी ।

अथ अवरक शोधनविधि नं० ३.

अवरकको आगमें गरम करके गायके दूधमें त्रिफलेके काढेमें, कांजीमें गोमूत्रमें सात सात दफे बुझावे तो शुद्ध होय अथवा काला अभरक सात बार दूधमें बुझावे फिर अवरकके वर्क अलग अलग होजावेंगे तब चौलाई कागजीके अर्कमें आठ पहर घोटै और चाहे आठ पहर इसीमें भिगोकर दो पहर घोटै तब शुद्ध होगी ।

अथ शिलाजीत शोधनविधि नं० ४.

ऽ॥ आधसेर त्रिफला दरदरा कूट कर ३२ सेर पानीमें औटावे जब आठ सेर पानी जल जाय तब छान लेवे तिस पानीमें ३ तीन पाव शिलाजीत दरदरा कूट कर१दिनराति भिगोवे फिर पानी टपका लेवे गादि न आनेपावे तिस पानीको कढाईमें औटावे जब राब सा होजाय तब उतारले फिर गायका दूध त्रिफलाका काढा भँगराका अर्क इन तीनोंमें अलग अलग एक एक दिन घोटे तब शिलाजीत शुद्ध होय।

अथ गूगल शोधनविधि नं० ५.

ऽ॥आध पाव गूगलको ऽ= तीन छटाक त्रिफलेके काढेमें औटा कर फिर छानकर कढाईमें पका कर निकाल ले सब गूगल शुद्ध होगया।

अथ धान्यावरककरणविधि नं० ६.

शुद्ध अबरक एक सेर और धान पावभर दोनों कमरी या गजीके थैलेमें भरकर तीन दिन भिगोय रक्खै फिर कूंड़े या कठौतीमें दोनो हाथोंसे मलै पानीमें थैलीको दो पहरतक रखे फिर अबरकके चूरणको थैलीसे निकाल लेय और पानीमें रहे चूरणका धीरे धीरे पानी निकाल डाले फिर सबको इकट्ठा थैलीमें

भरकर फिर कठौतीमें और पानी डाल उसी थैलीको एक दिन भिगोय रक्खै सुबहको उसी तरह मलकर अबरक चूरण निकाल लेय ।

अथ शिंगरफशोधनविधि नं० ७.

शिंगरफको दो पहर कागजीके अर्कमें घोटे और दो पहर भेडके दूधमें घोटै तब शुद्ध होय ।

अथ हरतालशोधनविधि नं० ८.

तबकिया हरतालके टुकडे करके पहिले कॉजीमें दोलायंत्रसे एक पहर पकावे फिर पेठेके रसमें एक पहर, तिलीके तेलमें एकपहर, त्रिफलाके काढेमें एक पहर पकावे तब शुद्ध होय और फूकने योग्य होय ।

अथ मनसिलशोधनविधि नं० ९.

मनसिलको तीन दिन बकरीके मूत्रमें अथवा कुम्हेडेके रसमें औटानेसे शुद्ध होताहै ।

अथ कुचलाशोधनविधि नं० १०.

छटाक भर कुचला डेढसेर दूधमें औटावे जब दूध खडी होजाय तब कुचला निकाल कर धोय ले तब शुद्ध होय ।

अथ फिटकरीशोधनविधि नं० ११.

फिटकरी फूला करनेसे शुद्ध होतीहै ।

अथ मीठातेलिया शोधनविधि नं० १२.

मीठे तेलियाको गायके मूत्रमें तीन दिन भिगोवे जब उसमें सींक छिदकर पार होजावे तब शुद्ध होगा।

अथ धतूरा शोधनविधि नं० १३.

छटाक भर धतूरा डेढसेर दूधमें औटावे जब दूध रबडी होजाय तब धतूरा निकाल कर धोय ले तब शुद्ध होगा।

अथ सोनामक्खी शोधनविधि नं० १४.

तीन पैसेभर सोनामक्खी और एक पैसाभर सैंधानोन दोनोंको जमीरीके अर्कमें अथवा बिजौरेके अर्कमें आँचके ऊपर कढाईमें घोटे करछुलीसे जबतक सुर्ख न होवै तबतक घोटे जाय जब खूब सुर्ख होजाय तब जानो शुद्ध होगई अगर सैंधानोन नहीं डाले तौ भी कुछ हरज नहींहै।

अथ जमालगोटा शोधनविधि नं० १५.

जमालगोटा बक्कल दूरकर पोटली बांध दूधमें दोलायंत्रद्वारा पकावे एक घंटा फिर जमालगोटाके बीचमेंसे जिह्वा निकाल डाले बादको पानीमें घोटकर कोरे खपडोंपर लेप करे जब खूब सूख जाय तब छुडाकर रख छोडे जो चिकनापन बाकी रहजाय तौ फिर घोटकर खपडे पर लेप कर दे सूखनेपर छुडा ले तब शुद्ध होगा।

अथ भिलावा शोधनविधि नं० १६.

हवासे टूटकर गिरे हुए भिलावाको लेकर कपडेमें बाँधकर जमीनमें फैला कर ईंटसे मसलै फिर पानीसे धोयकर हवामें सुखलावे फिर दो दो टुकडे करके चौगुने पानीमें औटावे जब चौथाई पानी बाकी रहे तब उतार लेय इसी तरह दूधमें औटाकर धोकर घीमें भून ले तो शुद्ध हो ।

अथ पाराशोधनविधि नं० १७.

पहिले रूमी शिंगरफ कागजीके अर्कमें घोटकर टिकिया बनाय कर सुखाय कर डमरूयंत्रसे पारा निकाल ले फिर दो गड्ढे खोदे जिसमें खरल आजाय एक गड्ढेमें आग जलावै जिसका धुआँ निकल जाय तब उसपर खरल रखकर घोटै खरल ठंढा न होने पावै दिन रात घोटै इसको तप्त खरल कहतेहैं और इन चीजोंमें घोटै चीतेके काढेमें, हरॆके काढेमें, आकके दूधमें, सेहुँडके दूध तथा अर्कमें. धतूरेके, अर्कमें, कलहारीके अर्कमें, कनेरके अर्कमें, घुंघचीके अर्कमें, घीगुवारके अर्कमें लहसुनके अर्कमें इन सब चीजोंमें सात सात दिन और रात घोटै जब एक दवाईकी भावना पूरी होजाय तब धोय कर साफ करके दूसरी दवा डाले इस प्रकारसे पारा शुद्ध होजायगा ।

अथ राँगशोधनविधि नं० १८.

राँगको तेल, मठा, गोमूत्र, काँजी, कुलथी, इनमें सात सात वार बुझावे राँग शुद्ध होजायगा ॥ सिवाय तेलके और चीजोंमें जो बुझाव दिये जावें तो बरतनके मुँहपर काठका ढकना लगादे उसमें सूराख करदे उस सूराखके रास्ते राँग डाले क्योंकि राँग बुझावदेनेमें ऊपरको उडताहै ।

अथ सीसा शोधनविधि नं० १९.

सीसाको तेल, मठा, गोमूत्र; काँजी, कुलथी इनमें सात सात बार बुझावे सीसा शुद्ध होजायेगा ।

अथ कैंचकेबीजशोधनविधि नं० २०.

कैंचके बीजकी गिरी निकाल ले कैंचके बीज शुद्ध हो जायँगे ।

अथ धातुओंकीक्रियाविधि नं० २१.

सब धातुओंको बनानेके बाद चूल्हेके नीचे गाड़ दे जिसमें आग जलती होय जितने साल गडी रहेंगी उतनीहीं अच्छी होंगी ।

अथ चाँदीकी भस्म करणविधि नं० २२.

अजवायन ६ छे तोले एक रुपयेके आधी ऊपर रक्खे आधीनीचे रक्खै चारसेर कंडोंमें,उसका गोबरसे संपुटकर सुखायकर आच देवे इसी तरह बारह आँच

दे रुपया फूल होजावेगा खुराक १ रत्ती सहतमें खावै धातुको पुष्टकरै और ताकत करै ।

अथ चाँदी वा राँगकी भस्म करणविधि नं.२३

चाँदी शुद्ध और राँग शुद्ध दोनों वराबर लेकर राँगको पीसले फिर चाँदीका बुरादा करले दोनोंको मिलाय कर फिर हरताल वराबरका मिलाय कर काग जीके अर्कमें घोटै फिर टिकिया बनाकर सुखाकर चार सेर कंडोंकी आँच दे इसी तरह बारह आँच दे और हरआँचमें दसवां हिस्सा हरताल और डालता जाय फिर घीगुवारकी बारह आँच दे हरताल न डालै जब भस्म होजाय तब रख ले मात्रा आधी रत्तीसे एक रत्ती तक, केसर वंशलोचन, इलायची, सपेप मोती मिलाकर सहतमें खावै या पानीमें गोली बनाकर खावै तो बहुत बलकरै और धातुको वंसलोचन सपेदइलायची सतगिलोय ये सब एक एक रत्ती दवामें मिलाकर सह तके साथ खावै ऊपरसे दूध पिये धातुपुष्ट होगा ।

अथ सोनेकी भस्मकरणविधि नं० २४.

सोनेका चूर्ण करके कुकरौंधेके अर्कमें चार पहर अच्छी तरह ऐसा घोटे कि सोना अर्कमें मिलजाय फिर टिकिया बनाकर कुकरौंधेकी लुगदीमें रख कर सरवामें संपुट करके एक कपड़ौटी कर पाँच सेर अरने कंडोंकी

आंच दे थोडा पारा भी पहिलेही मिला ले अर्क कुकरोंदाफाडले उसमें खरलकरैसोना भस्म होजायगा मात्रा एक चावलसे दो चावल तक पुराने बुखारको शीतकी सांसको बहुत गुण करताहै और ताकत देता है अनुपान जो रसमानिकका है वोही इसकाहै कमज्यादा मौका देखकर करै किसी वख्त आदमीका बोल बन्द होजावे तो १ चावल दवा और तीन चम्मच चाहके साथ पिलावे तो उसीवक्त बोल खुल जावेगा।

अथ सोनेकी भस्मकरण दूसरी विधि नं० २५.

सोना दो तोले कविस मिट्टीमें लपेटकर आगमें लाल करके केलाके जडके अर्कमें या अगस्तके फूलके अर्कमें सातबारबुझाकर टुकडेकरबराबर पारामिलाकर खरल कर चार तोलेगन्धकतेल ऊपर देकर संपुटकरके पांच गिरहका गढा खोदकर तीस अरनेकंडोंमें फूकदे ऐसेही चौदह १४आंच दे तब भस्म होगा परन्तु हर एक आंचमें पारागन्धक डालता जावे जैसा ऊपर लिखाहै

अथ चन्द्रोदयकरणविधि नं० २६.

पारा,शिंगरफ, रांग,तूतिया, शोरा इन सबकोटका टकाभर लेकर केलेके अर्कमें पीसकर आतशी शीशीमें भरै फिर एक हांडीमें नीचे छेद करके भीतरसे अवरख छेद पर रखदे हांडीमें शीशी रखकर रेत भरदे मुह

शीशीका खूब बन्द करदेफिर आठपहरकी आंचदे ठंडी होजावे तब निकाल ले रंग गुलाबी होजायगा खुराक आधी मूँगकी बराबर कुष्ठवालेको मक्खनके साथ खिलावे और सीतका पसीना आताहो तब एक रत्ती अदरखके अर्कके साथ खिलावे और भूखके वास्ते एक रत्ती लौंग मिला कर सहतमें खिलावे और पुष्टिके वास्ते लौंग,जावित्री,जायफल इलायचीसपेद, वंशलोचन यह सब आधी आधी रत्ती चांदीका वर्क एक कस्तूरी एक चावल इन सब चीजोंको पीस कर दवा मिला कर मक्खनके साथखिलावेऔर सुजाकके वास्ते छे मासे बिहीदाना भिगोकर लबाब निकालकर उसमें मिसरी डाले और दवाके साथ वंसलोचन इलायची सपेद सतगिलोय एक२रत्ती मिलाकर लबाब बिहीदानाके साथ खावे ।

अथ चन्द्रोदयकरण दूसरीविधि नं० २७.

पारा, गन्धक, अवरक, वंग, शिलाजीत, इलायची सपेद इन सबको बराबर लेकर, केलेके अर्कमें ४ चार पहर खरल करे फिर सुखाकर रखले मात्रा २ दो रत्ती से ४ चार रत्ती तक सहतमें खिलावे तब वीर्य वृद्धिहो काम अधिक बढे गरमी करे तो बराबर गिलोयकारस लाकर खिलावे और ऊपरसे दूध पिलावे और प्रमेहवालेको सहत साथ खिलावे तो अच्छा है ।

अथ रसमानिकविधि नं० २९.

पहले पारा मुर्गीके अंडेके भीतर भर कर उस पर कपड़मिट्टी करे फिर एक हाँडीमें ऽ५ पॉच सेर अर्क आकासबेल भर कर उसमें अंडा रखकर आगके ऊपर चढावे जब चौथाई अर्क बाकी रहे तब ऽ५ पॉच सेर मठा उसीमें डालदे जब चौथाई बाकी रहे तब हॉडीको उतारले ठंढा होनेपर पारा निकालकर साफ करले फिर ४ चार तोले सेंधानोनमें पारेको खरल करे एक दिन बराबर खरल होता रहे फिर पारा साफ करके इसी दो २ तोले पारामें दो २ तोले मनसिल मिलाकर खरल करके तॉबेकी डिबियामें भरकर ऊपरसे कपडमिट्टी करे फिर वालूयंत्रमें आठ पहरकी ऑच करे वेरीकी लकडीकी फिर लकडी निकाल कर कोयले चूल्हेके ॱॱॱर रहे जब हॉडी

अथ रसमानिक दूसरीविधि नं० ३०

पारा पहले रसमानिककी तरह शोधले पारा२तोले मनसिल चार ४ तोले संखिया दो २ तोले गन्धकदो २ तोले इन सबको खरल करके आतशी शीशीमें भरके शीशीका मुँह वन्दकरे और वालुकायँत्रमें चढावे आँच पहर आठ ८की करे वेरीकीलकडीकी फिर लकडी निकाल कर कोयले चूल्हेके अन्दर भरे रहें जब ठंढी होजावे तब निकाल ले शीशीकी तलीमें जो दवा रहैगी वह कीट कहलायेगी और जो दवा शीशीके ऊपर मुँह पर आजाय वो फूल रहैगा गुण फूलमें जियादह है मात्रा १ रत्ती वंसलोचन १ मासे इलायची सपेद १ मासे दवामें मिलाकर सहत ६ मासेके साथ खावे भूख करे नामर्दको मर्द करे।

अथ रसमानिक तीसरीविधि नं० ३१.

पारा शुद्ध ८ आठतोला सीसा शुद्ध छे ६ तोला गंधक शुद्ध आठ तोला मनसिल शुद्ध आठ ८ तोला पहले सीसेको गरम करके उसमें पारा मिलायदे फिर सवको सुरमेकी तरह खूब पीसकर आतशी शीशीमें भरकर चढायदे आँच २४ पहर की दे भट्टी बनावे उसके मुखपर चार तरफको चार झरोखा रक्खे जिसमेंसे

अथ हरतालकी दूसरी विधि नं० ३४.

छटाक भर हरतालको पहिले दहीमें डालकर सात रोजतक रखदे पीछे हरतालको घीगुवारके अर्कमें खरलकर टिकिया बनाकर सुखावै फिर पीपलकी लकडीकी राख ढाईसेर कपडछानकरै एक हाँडीमें सवासेर राख भर कर हरतालकी टिकिया रखकर फिर ऊपरसे सवासेर राख भरकर हाथसे खूब दबादे चूल्हे पर चढाय कर बेरीकी लकडीकी बहुत मँदी आंच दे हांडीको देखता रहे राखमें दराज आवै तौ थोडीसी राख डालकर दबादे आंच मंदी करै इसीतरह छेपहर आंच करै उसके बाद हांडी ठंढी होनेपर उतारले दवा निकालले टिकियाके ऊपर जो राख जम जाय उसको छील डाले हरताल सपेद होजायगा जो कुछ जरदी बाकी रहे तौ दूसरे रोज आंच फिर देवै हांडीकी दराजका ख्याल न करैगा तौ हरताल उड़ जायगा यह हरताल जिसको रोज बुखार आताहो या रोज बढ जाताहो या जाडा देकर आताहो या सिर्फ बुखार आता हो या तिजारी या चौथिया आतीहो सबको डेढ घंटे पहिले एक चावल या दो चावल अखीर चार चावल तक कच्चे दूधमें खिलावे अच्छा होजायगा और सुजाकके वास्ते भेडके दूधका

खोवा करके उसमें दवा मिलाकर खिलावै ऊपरसे कच्चादूध पिलावे अच्छा होजायगा दूध वगैर मीठेका पीये गुड तेल,खटाई,लालमिरचका परहेज करे कुव्वते वाहको गरगौटी चिडियाके गोश्तमें मसाला डालकर भूनकर उसके साथ खावे तथा नामर्दीवालेको भी इसी तरकीबसे खिलावे ऊपरसे वगैर मीठेका दूध चावल खिलावे और धातु पतलीके वास्ते गायके कचे दूधमें खिलावे सात रोजतक ऊपरसे मलाई घी चावल खिलावे और सन्निपातके लिये अदरकके अर्कमें खिलावे ऊपरसे घी पिलावे और दमेके वास्ते वजरिया मछलीको मसाला डालकर घीमें पकावे उसमें दवा डालकर खिलावे ऊपरसे चनेकी रोटी मछली खिलावै तीन रोजतक, और फालिजके वास्ते मुरगीके कच्चे अंडीमें रखकर खिलावे ऊपरसे कच्चा दूध वगैर मीठेका पिलावे, और बुखारके वास्ते अदरक२२मासे अजवायन ४ मासे इनको पीसकर अर्क निकाल कर इनके साथ खिलावे ऊपरसे कच्चा दूध पिलावे और जिस्मके दरदके वास्ते भेडके दूधके खोवेके साथ खिलावे ऊपरसे घी खिलावे पथ्य दूध चावल अरहरकी दाल वगैर नमक की।

अथ संखियाकी विधि नं० ३९.

छटाकर भर संखिया घीगुवारके अर्कमें खरल करके

लपट निकलती रहे उन झरोंखोंके ऊपर ईंटोंको ऊँचा करदे जिससे लपट हांडीके मुखतक जाय १६ पहर आंच होनेपर हांडीके मुखको ढकदे जब हांडीकेमुखका रेत ऐसा गरम होजाय कि जिसमें धानकी खील हो जाय तब जान ले कि दवा ठीक बनगई रंग सुर्खहोगा काला रंग हो जाय तो जानो दवा नहीं बनी दवा शीशीकी नारमें आजावे वह बनगई या जो शीशीकी पेंदीमें दवा सुर्ख होजाय तो जानलो कि बनगई २४ पहरमें नहोवे तो ३२ पहरकी आंचदे हांडीकी पेंदीमें छेद करके अवरख लगावे छेद एक रुपये बराबर चौडाकरे उस अवरखके ऊपर शीशी रखकर वालूभरदे मात्रा १ रत्तीकी पुष्टिके वास्ते जावित्री, जायफल, लौंग, केशर, वंशलोचन, इलायची, सपेद, मोती यह सब एक एक रत्ती मिलाकर बारीक पीस कर सहतके साथ खावे और फालिजके वास्ते दवा १ रत्ती जावित्री कस्तूरी १ चावल सहतमें मिलाकर खावे और सीत आगया हो या सांस सरदीसे बढगई हो तो १रत्तीदवा अदरकके अर्कके साथ खिलावे पूरी मात्रा १ रत्तीकीहै बाकी जैसा मौका होय कमदे वलगमीखांसीको बहुत फायदा करताहै अनुपान ऊपर लिख चुकेहैं मौकेके साथ देना चाहिये।

अथ रससिन्दूरविधि नं० ३२.

पारा शुद्ध पल पांच५ गंधक शुद्ध पल पाँच५नौसादर टंक दो२फिटकरी टंक चार ४ इन सबको पीसकर आतशी शीशीमें भर कर रसमानिककी तरह पका लेवें आँच पहर २४ की दे मात्रा पूरी १ रत्तीकी, यह सरदीकी बीमारीको जियादा फायदा करताहै और बल करनेमें किसी कदर रसमानिकसे कमहै और बांकी वोही तासीर है वोही अनुपान है आँच मामूली लकडीकी करना चाहिये ।

अथ हरतालकी विधि नं० ३३.

हरताल पैसा दो२भर लेकर घीगुवारके रसमें खरल करे पहर आठ ८ फिर सहजनेकी जडके रसमें खरल करे पहर आठ८फिर गोली बनायकर सुखायकर कागजी नीबूके भीतर धरे और ऊपरसे सात कपडौटी करे और गोला बनावे तिस पीछे पीपलकी लकडीकी राख कराये हाँडीमें भरे तब गोला बीचमें रखकर ऊपरसे राख मुँहतक दाबिके खूब भरै और हाँडीपर सात कपडौटी करे फिर हाँडीके मुखपर परियाधर वज्रमुद्राकरे तिसपर तीन कपडौटी कर सुखायकर भट्टीपर चढाय दे आँच पहर २४ की देय ठंढा होय तब उतारले बस हरताल बनगया मात्रापूरी १ रत्तीकी पानके साथ खावै ।

टिकिया बनाय कर सुखावे फिर आधाझारेकी राख करके एक हाँडीमें सवासेर राख भरकर बीचमें टिकिया रक्खै फिर ऊपरसे सवासेर राख भरै और खूब दबायदेय चूल्हेपर चढाय कर बेरीकी लकडीकी आँच दे हाँडीको देखता रहै राखमें दराज आवे तो थोडीसी राख डालकर दबादे आँच मंदी करै इसी तरह आँच छै पहर करै उसके बाद हाँडी ठंढी होने पर उतार ले दवा निकालले टिकियाके ऊपर जो राख जमजाय उसको छील डाले संखिया सफेद होजायगा जो कुछ जरदी बाकी रहै तो दूसरे दिन फिर आँच देवे संखियाकी मात्रा तथा अनुपान तथा गुण हरताल नं२४ के मुताबिकहै और कोढ तथा फालिज तथा कुव्वतबाहाको भी बहुत फायदा करताहै तरकीब सब हरतालके मुताबिक है ।

अथ शिंगरफकी विधि नं० २६.

टके भर शिंगरफ अदरकके आधसेर अर्कमें घोटते घोटते सुखा ले शिंगरफ बन गया मात्रा आधी रत्तीसे १ रत्तीतक बलगमी खाँसीको पानमें रखकर खिलावे और बुखारवालेको तुलसीकी पत्तीमें रखकर खिलावे घंटेभर पहले बुखारसे और कुव्वतबाहाको सहतमें खिलावे फायदा करेगा ।

अथ शिंगरफ वजरकँधेवालेकी विधि नँ० ३७.

शिंगरफको जेतीके रसमें कागजीके रसमें कांजीमें तीन तीन दिनतक दोलायंत्रसे पकावै । इति शोधन ।

अथ मारण ।

ऐसे शुद्ध हुए शिंगरफको पैसा पैसा भरकी चार डेलियोंको चार तह कपड़ेकी छोटी थैली बनावे उसमें डालकर थैलीका मुह डोरेसे बांध दे और पावभर वजरकन्धेको पीसकर गोला बनाकर थैली शिंगरफकी गोलाके बीचमें रखकर ऊपरसे अंडके पत्तोंसे लपेटकर उसके ऊपर मट्टी लगाकर गोला बनावै और दस कंडोंकी आंच फूकदे कंडे पांच ऊपर पांच नीचे रक्खे वीचमें गोला रखकर फूकदे ठंढा होने पर थैली गोलामेंसे निकाल ले इसतरह वजर-फन्धेकी १०८ आंच दे हर आँचमें पावभर वजरकंधा पीसकर शिंगरफकी थैली पर लगाकर गोला बनाया जायगा और अंडके पत्ते लपेट कर ऊपरसे मट्टी लगा कर गोला बना कर दश कंडोंमें फूँका जायगा कंडे न पतले हों न मोटे हों अच्छे हों इस प्रकार फूंका हुआ शिंगरफ चन्द्रोदयसे भी अधिक गुण करताहै मात्रा १ रत्तीकी १ रत्ती लौंग मिलाकर सहतमें खावे

सुबहको भूंख करता है काम अधिक होय इसका अनुपान चन्द्रोदयके मुताबिक है वैद्यदर्पणकी रीतिसे बनाया और बरताहै ।

अथशिगरफकी विधि नं० ३८.

शिंगरफ १ तोला लेकर पहिले तीन दिन दौनामडुवाके अर्कमें भिगोया जावै चौथे दिन १ तोला अफीम उसी दौनामडुवाके अर्कमें मिलाकर एक कपडेकी पट्टीपर खुश्क करके शिंगरफ पर लपेटदे और डोरेसे खूब बांधदे फिर १ सेर रोगन कडुआको कढाईमें आंचपर चढावेऔर बेरीकीलकड़ीकी आंचमन्दीमन्दी चार पहर दे अगर चार पहरमें रोगन न बलै तो आंचसे बालदे इसी तरह तीनदिन आंच दीजावै तब शिंगरफ बन जायगा पुरना होनेसे आधी ॥ रत्तीसे १ रत्तीतक मक्खनके साथ खाये कुव्वतवाहाको बहुत मुफीद है ।

अथ शिंगरफ संखियाकी विधि नं० ३९.

शिंगरफ १ एक तोलाकी छोटी डली और सफेद संखिया६मासेकी छोटी डली लेकर दोनोंको वनअंजीरके दूधमें भिगोकर सात दफे खुश्क करै फिर तिल्लीका तेल २ दो सेर लेकर एक कढाईमें चढावें उसमें शिंगरफ संखियाकी डली चार तह कपडेमें बांधकर लटकावै और चार घन्टेकी मन्दी आंच देवै फिर नीचे

लिखे हुए काढेमें दवाईको पीसकर खरल करै जब खुश्क होजावै तब रखले दवाई बनगई काढाऽ। =)पाव पानी चढावै जब ऽ= आधपाव रहजावै तब काढा छानकर उसमें खरलकरे दवा काढेकी जाफरान४मासे लौंग ४ मासे इलायची सफेद४ मासे जायफल ४ मासे अफीम ४रत्ती मूसली सफेद १तोले, खुराक एक चावल दमाको अनारके छिकलाकी राखमें दे,सूखे दमाके वास्ते जामनके मुकत्तरमें, पित्तीके वास्ते १ तोला मुकत्तरमें।

अथ शिंगरफकी विधि नं० ४०.

१ शिंगरफ२०तोले२ भेड़का दूधऽ॥ सेर, ३ सफेद घुँगुची४०तोले,४कुचलेका पानी ऽ१॥ सेर, ५ मीठा तेलिया २० तोले, ६ भिलावा २० तोले, ७ लौंग ३०तोले, ८ आकका दूध ऽ॥ सेर, ९ थूहरका दूध ऽ॥ सेर, १० बड़ी इलायची १० तोले, ११ केशर १॥ तोले, १२ अफीम १ तोला १३ शराब २ बोतल, १४ मुर्गेके अण्डे २४ नग, १५ बकरेका खून ऽ२ सेर इन सब दवावोंको सात रोज घोटै और पकी चीनीके पियालेमें रखकर दूसरे पियालेसे ढक दे और ऊपरसे १ कपड़मिट्टी करके उस सम्पुटको वालूके वीचमें हांडीमें रक्खै और हांडीका मुंह बन्दकरके कपडौती करदे और ऽ८ सेर कंडोमें रखकर फूंकदे निकालै तो

रंग सुर्ख होगा और तेलका कुछ गीलापन रहेगा खुराक १ रत्तीसे ४ रत्तीतक, वातव्याधिको फायदा करता है और पुष्टभी है अनुपान जैसा मौकाहो लेकिन दवा सुखाकर पियालेमें रक्खे।

अथ अभ्रककी विधि नं० ४१.

कृष्ण अभ्रक लेकर कूटके महीन रेतसा करले और काले कुकरौंदेमें जिसकी डंडी काली होतीहै उसके अर्कमें घोटे चमक जाती रहे उसके पीछे टिकिया बनाकर सुखाले फिर भंगको बारीक पीसके कागजके समान टिकिया पर लेप करे फिर उसको सुखा ले दो सरवोंमें रख गजपुटकी आंच दे-सरवोंका मुह बन्द न करे एकही आंचमें भस्म होगा रंग सुर्ख होगा।

यह एक आंचका अभ्रक १००० आंचकी बराबर गुण करताहै और वही अनुपान है और सरवेके अंदर टिकियाके तले ऊपर एक एक पत्ता आकका रखदे लेकिन २ तोले दवाहो और २ रुपये बराबर टिकिया बनावै तब दवा ठीक बनैगी।

अथ अभ्रकरसायन नं० ४२.

कृष्ण अभ्रकको शुद्ध करके दो दिन जँभीरीके रसमें घोटै तीन दिन काँजी संगके १ दिन त्रिफलाके रसमें १ दिन सेंजनेके रसमें घोटे १ दिन छुईमुईके रसमें १

दिन असगन्धके रसमें घोटै फिर सम्पुटमें धरके १ मटकेमें कंडेका चूर्ण करके भरदे और बीचमें दवाईका सम्पुट धरके फूँकदे जब ठंढा होजाय तब निकाले मात्रा एक उडद बराबर खाय नारियलके दूधके संग खानेसे सब रोगको दूर करै और मुरैठीके चूर्ण और ब्राह्मीके रसमें सेवनसे आयुको बढावै और सब रोग दूरकरै और शंखाहुलीका चूर्ण और गिलोयके रसमें खाय तो उमर बढै और सब रोग दूर होयँ और भँगरापत्र आमलेका चूर्ण मिश्री काले तिल मिलाय उसके साथ खाय तो बुढापा नहीं होय भँगरेका रस और दूध मिलायके खाय मूक वक्ता होय और बहिरा सुनने लगे जिसके पुत्र न होय उसके पुत्र होय बाल काले हों दांत पुष्ट हों शरीर पुष्ट होजावे।

अथ अभ्रककी दूसरी विधि नं०४३.

धान्याभ्रकको एक दिन कुकरौंधेके रसमें घोटै और टकेभरकी टिकियाको बाँधे घाममें सुखायटिकियाके तले ऊपर आँकका पत्ता रक्खै सरवा सम्पुटकरके दो सेर कंडेके बीच सम्पुट धरके आँच दे ऐसे ही चौदह आँच दे अथवा जबतक चमक रहे तबतक केवल कुकरौंधेके रसमें घोटके और इसी तरह एक दिन गोमूत्रसे घोटके सात आँच दे और इसी तरह त्रिफलाके

कांढ़ेमें एकदिन घोटके सात आँच देवे तिस पीछे एक दिन आकके दूधसे घोटके ७ सात आँचदे तिस पीछे जो बहुत लाल करा चाहे तो १या२दिन वर्गदकी जटाके रसमें घोट घोट ७ आँच दे अदरकके अर्कमें आखीर वक्त जब शीत आगया हो तब दिया जावै ।

अथ सहस्रपुटी अभ्रकमारणविधि नं० ४४.

आँकके दूधकी १६पुट, १ वटके दूधकी १६ पुट,२ थूहरके दूधकी १६ पुट,३ घीगुआरके रसकी १६पुट,४ अंडके जडके रसकी १६ पुट,५ कथकी १६ पुट,६मोथा १६ पुट,७गिलोय १६ पुट, ८भाँग १६ पुट, ९ गोखरू १६पुट, १० कटेली १६ पुट, ११ शालपर्णी १६ पुट, १२पृष्ठपर्णी १६पुट,१३ सरसों १६ पुट,१४ चिरचिटा १६ पुट, १५ बरगदकी जटा १६ पुट, १६ बेलकी छाल १६ पुट,१७ अरनी १६ पुट, १८ चीता १६पुट, १९तेंदू १६ पुट,२० हर्डकी बकली १६ पुट,२१ पाढर १६ पुट,२२ गोमूत्र १६ पुट, २३ आमला १६ पुट, २४ बहेडा १६ पुट,२५ जलकुम्भी १६ पुट,२६ताली-सपत्र १६ पुट, २७ ताडवृक्षकी जड १६ पुट, २८ विसौंटा १६ पुट, २९ असगंध १६ पुट,३० अगस्तके रसकी १६ पुट, ३१ भँगरा १६ पुट, ३२ केलाकन्दके रसकी १६ पुट,३३ धतूरेके रसकी १६ पुट,३४ लोध

१६ पुट, ३५ देवदारु १६ पुट, ३६ दोनों दूबके रस १६ पुट, ३७ कसौंदी १६ पुट, ३८ मिर्च१६पुट, ३९ अनारके रस १६ पुट, ४० मकोय १६ पुट, ४१ शंखपुष्पी १६ पुट, ४२ तगर १६पुट, ४३ ब्राह्मी१६ पुट,४४सूर्यमुखी १६ पुट, ४५इन्द्रायन १६पुट, ४६ भारंगी १६ पुट, ४७ घुसरायन १६ पुट, ४८कैथ१६ पुट, ४९ शिवलिंगी १६ पुट, ५० ढाक १६ पुट,५१ तुरई १६ पुट, ५२ मूसाकर्णी १६पुट,५३जवासा १६ पुट, ५४ मछेली १६ पुट, ५५कलौंजी १६ पुट, ५६ हुलहुला १६ पुट, ५७ शतावर १६ पुट, ५८ बकरेके खूनकी १६ पुट, और अधिक देना चाहे तो जटा-मासीकी १ पुट, गोदूधकी १ पुट, १ गोदही १ पुट, गोघृत१पुट, शहद १पुट, खांड १ पुट, पालक १ पुट, मैनफल १ पुट ।

बाकी बरगदकी जटाके काढेकी पुटें दे जबतक लाल होय इससे अधिक और देना चाहे तो एक एक पुट इन दवाइयोंकी और देदेय ।

ढाकके फूलकी १ पुट, गुड़की १ पुट, सुहागा १ पुट, चमेली १ पुट, सप्तपर्णी १ पुट, कौंच१पुट,गाजर १ पुट, पियाज १ पुट, ९ लहसुन १पुट, उटंगन १ पुट, हिलमोचिका १पुट, अमलवेत १ पुट, दूधी १

पुटे, पातालगडरी १ पुट, खुराक २ चावलसे १ रत्ती तक खिलाया जावेगा अनुमान जैसा मौका देखें और इस्के गुण अनन्त हैं ।

अथ तांबामारणविधिपहिली नं० ४५.

तांबा बीस तोले ,पारा दस तोले, गंधक बीस तोले सब शुधे हों तांबेके वर्क जौके बराबर काट लिये जावें फिर पारा डाल कागजीके अर्कमें जबतक पारा चढे तबतक घोटे जब सब पारा चढि जाय तब तीन दफे कागजीका अर्क डाल कर एक एक पहर घोट घोट कर धोता जाय फिर सुखा कर गन्धक डाले बारीक खरल करके शीशीमें भर वालूयंत्रसे बारह पहरकी तेज आंचदे तब भस्म हो फिर घीगुवारमें खरल कर गज पुटमें सात आं चदे तब सिद्ध होगा ।

मात्रा रत्तीभर टेसूके फूलके काढेमें दे तो पेट फूलना और पेशाब बन्द होजाना दूर होजाय, सन्निपात फोतामें पेशाब उतरि आताहै उसमें दे बाकी बहुत मर्जोंकी दवाहै ।

आगे ७आंच घीगुवारकी देओ अथवा नहीं देओ जो तांबेमेंके आनेकी भ्रांति रहिजावे तो घीगुवारके आंच देनेकी जरूरतहै वरना नहीं ।

अथ शीशे (नागरस) की पहिली विधि नं० ४६.

पहिले शीशेको कढ़ाईमें चढ़ा कर ऊपरसे मकोयके पेड़की पत्ती सब डालता जाय औरकरछुलीसे चलाता जाय जबतक भस्म न होवे दो दिन आँच देय फिर कागजी या दहीके रसमें टिकिया बाँधिके सुखाकर फिर चार पहर आँच देय दो दो घंटेको ढक देय रंग सुर्ख हो जावैगा, मात्रा रत्तीभर बुखार और खाँसीके लिये कुव्वतके लिये और सुजाक पुरानी होनेकी वजहसे कमर या पिंडुरीमें दरद रहताहो इन सबके लिये चटनी सितोपलादमें दिया जावै बहुत नफा करताहै।

अथ शीशेकी क्रिया नं० ४७.

शुद्ध शीशा एक मिट्टीके ठिकरमें एक सेर डालै आगपर चढ़ावै केवड़ेकी लकड़ीसे चलता जाय जबतक भस्म होवै, उसके बाद शोरा एक सेर पिस कर रखले थोड़ा थोड़ा डालता जाय लोहेकी करछीसे चलाता जाय तब शोरा कीचड़की तरह पतला होजाय तभी और डालता जाय जब सब शोरा पड़ चुके जब जरा दूरसे घोटता जाय शोरा एकदम बल जायगा तब सब दवाको ठिकड़ेमेंसे छील कर इकट्ठी करके धो लेय उसके बाद बरगदकी जटाके अर्क

और केवड़ाकी जड़के अर्कमें घोंटकर टिकिया बनावे सुखाकर रख लेय फिर पाव भर दवाको चार सेर कंडोंकी आँचमें सम्पुट करके जबतक शीशा भस्म होकर नरम नहो जाय तबतक आँच देवे. यह वैद्यककी नहीं है हमारी जाती निकाली हुई है इस शीशेका रंग कदर जरद होगा मात्रा आधी रत्ती आध पाव अर्क अनारशीरीके साथ दिया जावे, तो खून बवासीर बन्द होगा और सुजाकको अर्क गिलोय दो तोले और शहद एक तोलेके साथ दिया जावे । और छुहारा धेला भर तज धेला भर खूबकला धेलाभर शामको एक मिट्टीके बरतनमें पावभर पानीमें भिगोवे सुबह छान कर मिश्री डालकर पिये सिर्फ यही बहुत नफा करता है अगर इसके साथ कुश्ता दिया जावे तो बहुतही फायदा करता है औरविहीदानाके लुआबके साथ कुश्ता सुजाकमें खिलावे ।

अथ कुश्ता राँग का नं० ४८.

शुद्ध राँगको कढ़ाईमें गलावे और भाँग इमली हलदी पीपलकी छाल यह सब चीजें राँगके बराबर बराबर लेकर पीस कर रख ले जिस वक्त राँग गल जावे तब उसमें थोडी थोडी चीजें डालता जावे और करछलीसे चलाता जावे जब सब राख होजावे तब ढक कर कढ़ा-

ईमें दो पहर खूब आंच दे फिर उतार कर रखले जब ठंढी हो जावे तब छान कर रख ले फिर गुवारके रसमें घोटकर टिकिया बनाकर सुखा ले आठवां हिस्सा अजवायन नीचे सरवेमें बिछा कर ऊपर टिकिया रक्खें फिर टिकियाके ऊपर अजवायनआठवां हिस्साबिछावे और आंचदे फिर खालिसघीगुवारकेरसमें घोटेऔर १७ आंच दे फिरघीगुवारके रसकेसाथमेंबारहवांहिस्सापारा शिंगरफका निकलाहुआ डालकर आंचदे पाराहर आंचमें पड़ेगा फिर हलदी सेमलकीमूसलीसतावरगोखरू तालमखाना बीजबंद गिलोय संभालू इन सबकी तीन तीन आंच दे यह बंग बहुत अच्छीहै, प्रमेह जरियान प्रदरको १रत्तीबंग, १रत्तीसिलाजीत,१रत्ती बंसलोचन १रत्ती सफेद इलायची,१ रत्ती सतगिलोय इन सबको पीसकर मिलाकर सहतमें खावे पहले बंगको दो रोज गुलाबमें घोट ले जाडेमें एक रत्ती बंग खावे गरमीमें आधी रत्ती खावे और हलदी सितावर वगैरा जो दवा लिखीहै इनमेंजिसका अर्क निकल आवे तो उसमें घोटे और आंच दे और जिसका अर्क नहीं निकले उसका काढा करके उसमें घोटकर आंच दे।

अथ रांगखीलवालेकी क्रिया नं० ४९.

एक छटांक रांगा चमचेमें गलावे उसमें टके भर पारा डाल कर नीचे कुछ अरसेसे छोड़े जिसमें पतला

पत्र बन जाय उसके बाद दो कंडे बड़े आध आध गजके लेवे पहिले एक तह छोटे कंडोंकीगड्ढेमेंबिछावे उसके ऊपर बडा कंडा रक्खे उसके ऊपर सवासेर शीशमका बुरादा बिछावे उसके ऊपर रांगके पत्र धरे ऊपरसे फिर सवासेर बुरादा बिछावे उसके ऊपरसे फिर दूसरे कंडेसे ढांक दे फिर उसको ऊपरसे एकतह छोटे कंडोंकी लगावे फिर आग देवे जब ठंढा होजाय तब संभाल कर खील बीनले जो कच्चा रहिजाय तो फिर दुवारा ऐसा ही करलेवे और शीशमके बुरादाकी जगह कड़वी खलमें और मेंहदीके पत्तोंमें बन जाताहै बाकी सब वही किया है यह ऊपरवालेसे किसी कदर कमजोरहै एक रत्तीशहदके साथ खाय तो कुव्वतवाहको फायदा करे और धातु पतली बन्द हो ।

अथ रांग शोधनविधि नं० ५०.

शुद्ध रांगऽ॥ आध पाव लेकर एक ठिकरेमें रखकर पिघलावे जब पिघल जाय तब शोरा टके भर डाल कर छुरीसे चलाता जाय जब कीचसा हो जाय तब फिर टके भर शोरा डाले इसीभांति ६ दफे शोरा डाले और कीचसा करे जबतक ठिकरेसे आग न निकलै तबतक करछुरीसे रगड़ता रहे जब आग निकले तब शोराको जलजाने दे जब बुझे तब उतारे

छुरीसे खुरच कर महीन पीसकर एक पियालेमें डाल कर पानी डाल कर हाथसे मलदे राँग तले वैठि जायगा और पानी निकाल देय इसी भाँति तीनदफे करै फिर राँगको निकालदे कर सुखा लेय फिर बराबर हरताल मिलाकर कागजी निम्बूके अर्कमें एक पहर घोटै फिर शराव सम्पुट करके गजपुटमें फूँक देय फिर दशवां अंश हरताल डाल कर कागजीके अर्कमें घोटकर गजपुटमें फूँक देय इसी भाँति दश दफे दशवां अंश हरताल डालकर फूँका जायगा तब शुद्ध हो जायगा तथा भस्म होजयगा खुराक १ रत्ती वंसलोचन सफेद इलायची मोती चाँदीके वर्क इनके साथ शहतमें मिलाकर खावे पहिले रांग और मोती अर्क गुलाबमें तीन दिन खरल करले तो प्रमेहको धातु पुष्टको बहुत फायदा करेगा।

कुमुदेश्वर रस नं० ५१.

पारा शुद्ध गंधक शुद्ध अवरख शुद्ध शिंगरफ शुद्ध मनसिल शुद्ध सारमनसल सबको पीसकर चौदह भावना सतावरके अर्ककी देय खुराक १ रत्ती सहत तथा शर्वत अनार तथा शर्वत नीलोफरमें खावे बुखारकी दाहमें तथा बुखार उतारनेको वंसलोचन सफेद इलायची मिलाकर दे खाँसीमें जक्ष्मातक २ मासे मिश्री ५ काली मिर्च मिलाकर शहतमें खिलावे।

दमें मिलाकर खरल करे दो पहर भर फिर तांबेके संपुटमें रखकर मूंज डालकर बनाई हुई मिट्टीसे खूब मजबूत संपुट करे फिर सुखा कर पांचसेर कच्चे जंगली कंडोंकी आंचमें फूक देय ठण्ढा होने पर निकाले फिर चार मासे शिंगरफ और चार मासे पारा मिलाकर अंडीके तेलमें खरल करे और पहिलेकी तरह आग देय ऐसी ही सौ पुट आंच देय हर दशवीं आंचमें तांबेका नया और सम्पुट लगाता जाय तो सिद्ध होगा। मात्रा एक चावलभर अनुपानसे देय तो नामर्द मर्द होय पुष्टि और बहुत गुण करे। कंडे पाँच सेर कच्चे यानी अंग्रेजी तोल ।

अथ मण्डूर बनानेकी क्रिया नं० ५६.

लोहेकी कीटिको बहेडेकी लकडीके कोयलेमें लाल करके बहेडेकी लकडीके कठरेमें गोमूत्र भरकर सात दफे वुझाय देय फिर इमामदस्तेमें कूटकर कपड़छान करके धोयकर साफ करलेय फिर त्रिफलेके काढेमें कढ़ाईमें डाल कर तेज आँच देय उसके बाद खट्टेदही तथा मठेसे ४ पहर घोटकर गजपुटमें आँच देय इसी तरह २१ आँच देय तथा जबतक लाल नहीं होवें आँच देता जावै आगे गजपुटका प्रमाण गढ़ा बारह गिरहका रक्खे यह दवा संग्रहणी तथा अतीसारकी

है। और बुखार तथा सूजनकी है ख़ुराक १ रत्तीसे २ रत्ती तक माठेके साथ तथा शहतके साथ।

अथ मूँगेके कुश्ताकी विधि नं० ५७.

मूँगा एक छटांक भर लेकर एकमलैयामें घीगुवारके पट्ठेका गूदा नीचे भरे उसके ऊपरसे मूंगा धरे फिर मूंगेके ऊपरसे आधपाव गूदा धरे बादको मलैयाका सम्पुट करके गजपुटमें फूंक देय एक रत्ती पानमें या शहतमें खांसी बुखार और कुव्वतको नफा करताहै जियादा कुव्वतवाला करनाहो तो चटनी सितोपलाद जिसमें मोती और चांदीके वर्क मिलेहो उसमें खाना चाहिये।और मूगेके कुश्तेको और अच्छाकरनाचाहेतो मूगेके साखको तीनरोज पहिले कागजीअर्कमेंभिगोयदे

अथ मोतीके कुश्ताकी विधि नं० ५८.

मोती एक तोलेघीगुवारके पट्ठेका गूदा चार तोलेके वीच रखकर सरवासम्पुटकर चारसेर कंडोंकी आंचमें फूंक देय एक रत्ती चटनी सितोपलाद जिसमें मोती और वर्क चांदी मिलेहो उसके साथ देना चाहियेकुव्वतके लिये और हिचकीकी वीमारीके लिये बहुतही अच्छी चीजहै ॥

अथ हीरा व चुन्नीमारण विधि नं० ५९.

जो हीरा सुर्ख खिले तोसबसेअच्छाहै पहिलेहीरेको

दमें मिलाकर खरल करे दो पहर भर फिर तांबेके संपुटमें रखकर मूंज डालकर बनाई हुई मिट्टीसे खूब मजबूत संपुट करे फिर सुखा कर पांचसेर कच्चे जंगली कंडोंकी आंचमें फूक देय ठण्ढा होने पर निकाले फिर चार मासे शिंगरफ और चार मासे पारा मिलाकर अंडीके तेलमें खरल करे और पहिलेकी तरह आग देय ऐसी ही सौ पुट आंच देय हर दशवीं आंचमें तांबेका नया और सम्पुट लगाता जाय तो सिद्ध होगा। मात्रा एक चावलभर अनुपानसे देय तो नामर्द मर्द होय पुष्टि और बहुत गुण करे। कंडे पाँच सेर कच्चे यानी अंग्रेजी तोल ।

अथ मण्डूर बनानेकी क्रिया नं० ५६.

लोहेकी कीटिको बहेडेकी लकडीके कोयलेमें लाल करके बहेडेकी लकडीके कठरेमें गोमूत्र भरकर सात दफे बुझाय देय फिर इमामदस्तेमें कूटकर कपड़छान करके धोयकर साफ करलेय फिर त्रिफलेके काढेमें कढ़ाईमें डाल कर तेज आँच देय उसके बाद खट्टेदही तथा मठेसे ४ पहर घोटकर गजपुटमें आँच देय इसी तरह २१ आँच देय तथा जबतक लाल नहीं होवें आँच देता जावै आगे गजपुटका प्रमाण गढ़ा बारह गिरहका रक्खे यह दवा संग्रहणी तथा अतीसारकी

है। और बुखार तथा सूजनकी है खुराक १ रत्तीसे २ रत्ती तक माठेके साथ तथा शहतके साथ।

अथ मूँगेके कुश्ताकी विधि नँ० ५७.

मूँगा एक छटांक भर लेकर एकमलैयामें घीगुवारके पट्ठेका गूदा नीचे भरे उसके ऊपरसे मूंगा धरे फिर मूंगेके ऊपरसे आधपाव गूदा धरे बादको मलैयाका सम्पुट करके गजपुटमें फूंक देय एक रत्ती पानमें या शहतमें खांसी बुखार और कुव्वतको नफा करताहै जियादा कुव्वतवाला करनाहो तो चटनी सितोपलाद जिसमे मोती और चांदीके वर्क मिलेहों उसमें खाना चाहिये।और मूंगेके कुश्तेको और अच्छाकरनाचाहेतो मूगेके साखको तीनरोज पहिले कागजीअर्कमेंभिगोयदे

अथ मोतीके कुश्ताकी विधि नँ० ५८.

मोती एक तोलेघीगुवारके पट्टेका गूदा चार तोलेके वीच रखकर सरवासम्पुटकर चारसेर कंडोंकी आंचमें फूंक देय एक रत्ती चटनी सितोपलाद जिसमें मोती और वर्क चांदी मिलेहों उसके साथ देना चाहियेकुव्व· तके लिये और हिचकीकी वीमारीके लिये वहुतही अच्छी चीजहै ॥

अथ हीरा व चुन्नीमारण विधि नँ० ५९.

जो हीरा सुर्ख खिले तोसवसेअच्छाहै पहिलेहीरेको

अथ सार (लोहा) की पहली विधि नं० ५२.

शुद्ध लोहेका चूर्ण वारह पैसेभरले शिंगरफ एक पैसे भर दोनों घीगुवारमें दोपहर घोटे फिर चार टिकिया वनावै सरवा सम्पुट करके चारसेर कंडोंकी आँच दे इस प्रकार सात आँच दे तो भस्म होगा, हर आँचमें शिंगरफ पैसेभर डालता जाय यह सार अक्सर दवाओंके जोगमें डालनेके काम आता है।

अथ सारकी दूसरी विधि नं० ५३.

लोहा वारह पैसेभर, मनशिल पैसेभर घीगुवारके रसमें दोपहर घोट कर सात टिकिया वनावै सरवा सम्पुट कर दो सेरकंडोंकी आँच देय ऐसेही वारहरोज आँच देय तो भस्म हो, हर आँचपर मनशिल डालता जाय,कुलदवामें यही शामिल किया जाताहै।कफकी खासीमें पीपल या पानके साथ अथवा शहतके साथ देवै।बुखारको मुनका भून कर उसमें रखकर एक घंटा पहिले दिया जावै अगर खुश्कीहो तब कासनीके पत्ते फाडकर उसमें शर्कजवी दारसी डाल कर उसके साथ दिया जावै। साँसको पीपलके साथ दिया जावै। बुखार और खुश्कीकी हालतमें शरवत नीलोफरके साथमें दिया जावै।

अथ सारकी तीसरी विधि नं० ५४.

असली फौलाद रेत कर शुद्ध आठ तोलेमें आठ मासे पारा डाले फिर शरावमें दो पहर बराबर खरल करै रुके नहीं बादको सरवा सम्पुट कर कपडोटी करकेपान भरके डोंकी आंचमें फूंकदे ठंढा होनेपर निकालेफिरआठ मासे पारा डाले शरावमें पहिलेकी तरह खरल करै और आंच देवै इसीतरह अस्सी आंच देवै और हर दशवीं आंचमें सरवा नये बदलता जाय। फिर उसमें सफेद संखिया चार माशे मिलाकर शरावमें पहिलेकी तरह खरल करै और आंचदे ऐसी इक्कीस आंचदे हर पुटमें संखिया डालता जाय। फिर आतशी शीशीमें भर मुखबन्द कर गेहूके कोठेमें इक्कीसदिन दबा रक्खे फिर निकाले रंग नारंगीके समान होगा,मात्रा चांवल भर है पूस, माघमें खाय।सात रोज खानेसे बल खूब बढ जायगा। जितनाही पुराना होगा उतना ही अधिक गुण करैगा। और इस फौलादको दो साल तक चूल्हेके नीचे गाड़ा रखे जिसमें हरवक्त आग जलतीहो तो गुण अधिक हो जायगा अनुपान जो चंद्रोदयका है वही इसकाहै।

अथ सारकी चौथी विधि नं० ५५.

फौलाद रेतकर चार तोलेमें चार माशे शिंगरफ मिलावे फिर कुक्कुटके अंडेका तेल निकालकर फौला

कटैया जिसमें भटेकी तरह फल आताहै उसकी जड़ पावभर कूट कर उसमें रखकर गजपुटमें सम्पुट करके आंच देय बादको घोडेकी पेशावमें २१ वार बुझावै, उसके बाद लोहेके खरलमें खूब बारीक करै पत्थरका खरल घिस जाताहै जब खूब बारीक होजावै तब चाहै और खरल पुल्लामें डाल लेय एक तोले हीरा दो तोले शिंगरफ शुद्ध और वन अंजीरके दूधमें तीन रोज खरल करै जो दूध कम मिलै तो उसके जडकी छाल कूटकर अर्क निकाल लेवै उसमें खरल करै फिर एक रोज आकके दूधमें खरल करै फिर एकरोज कपास नरमाके अर्कमें खरल करै फिर एक रोज सेउड़के दूधमें खरल करै बादको गोला बनालेवै और तफसीलजैल दवाइयोंको इकट्ठा कर उनमें रख कर गजपुटकी आंच देय (दवा गोला बनानेकी)

१ मेंढेका सींग४तोले, २ कछुआकी पीठ ४ तोले, ३हाथीदांत४ तोले,४कनैरकी छाल ४ तोले,५ सोनामक्खी शुद्ध १ तोले६मेंढ़ासिंगी४तोले,इन दवाइयोंके दो हिस्से करै एक हिस्सेमें गूलड़का दूध८ आठ तोले उसके मिल जाने पर आकका दूध ८आठ तोले डाल कर खरलकरै एकरोज दूसरे रोज२सेंउडकादूधडालकर खरल करै उसके अन्दर हीराका गोला रखकर सम्पुट पुल्ला करके गजपुटमें फूँक देय ठंढा होनेपर निकाल

लेवे इसके बाद निस्फ हिस्सा जो दवा बाकीहै उसको अव्वल तरकीवसे खरल करे हीरेको औरतके दूधमें खरल करके गोला बनाकर खुश्क करके निस्फ हिस्सा दवामें रखकर गजपुटमें फूंक देय हीरा खाक हो जावैगा चुन्नी भी इसी तरह बनाई जावैगी जो फायदा हीराके हैं वह होंगे नामर्दीको शिंगरफ एक चावल जो संखिया मिला हुआ आगे लिखा जायगा और दो चावल हीरा मिलाकर मक्खनमें खिलावे ४० चालीस रोज तक अच्छा होजावैगा।

अथ लक्ष्मीविलास रस नं० ६०

१ अवरख १पल,२ रसराज१० माशे३ गन्धक१० माशे,४ भांग २५ दाम, ५ धतूरेके वीज २५ दाम, ६ विधारा २५ दाम, ७ सौंफ २५ दाम, ८ विदारीकन्द २५ दाम, ९ जायफल २५दाम,१०गुलसकरी२५दाम, ११गंगेरण२५दाम, १२ शतावर२५ दाम, १३ गोखरू २५ दाम, १४ जावित्री २५ दाम,१५ कपूर२५ दाम।

इन पन्द्रहों चीजोंको पीसके पानीमें चार रत्ती गोली बांधे इसके खानेसे सन्निपात, वातपित्त रोग अठारह प्रकारके रोग कोढ़के और वीस प्रकारके प्रमेह जाँय नाड़ी व्रण और गुदाके रोग भगन्दर श्लीपद गुल्म अतीसार अन्तर वृद्धि पीनस छर्दि अर्शभेद आ-

उतार लेय और शीशीको वालूयंत्रमें छे पहरकी आंच देय तब बन जाताहै बाकी सब वही ऊपरकी कियाहै इसमें गुण अधिक होताहै खून वढाने और बुखार और भूखको एक रत्ती शहदके साथ खाय । और धातु पुष्ट और प्रमेहके वास्ते वंसलोचन सफेद इलायची और सतगिलोयके साथ खाना चाहिये ।

अथ नागरसहकीम दुर्गाप्रसादवाला नं० ६४.

गेहू दो तोले सेलमखरी दो तोले मोती सच्चे दो माशे इन सबको खरलमें सुरमेकी तरह वारीक पीसलेवै बुखारके वास्ते कासनी फाडकर एक सफेद इलायची मिलाकर दो रत्ती दवा शिकंजवी दारमीमें डालकर देना चाहिये जो बुखारकी गर्मी जियादा होय और किसी वजहसे खुश्की जियादा हो तो दो रत्ती दवा एक सफेद इलायचीमिलाकर शर्बत नीलोफर या शिकंजवी दारमी या शहदमें देना चाहिये पेचिश और खांसी खुश्कमें लऊकसीपिस्तांके साथ देना चाहिये और खून किसी जगहसे आता हो तो वंसलोचन और सफेद इलायची मिलाकर अर्क अनारके साथ खिलावे तो फौरन खून वन्द हो जावैगा ।

अथ शोराका कुश्ता नं० ६५.

कंडोंकी उखली वनावै कि जिसमें दवा आ जाय शोरा

छटांक अर भाँग पावभर नकछिकनी सूखी पाव भरले पहिले उखलीमें आध पाव भांग रक्खै फिर आध पाव नकछिकनी रक्खै उसके ऊपर शोरा रक्खै फिर उसके ऊपर नकछिकनी रक्खै उसके ऊपर भांग रक्खै फिर दो तह कंडोंकी तले और दो तह ऊपर रखकर फूंक देय भस्म होजायगा रंग सफेद होगा सुजाकमें पानमें रखकर खावे सेहत होगी।

अथ संग्रहणीकपाटरस नं० ६६.

शुद्ध गन्धक शुद्ध पारा अभरक शिंगरफसार जायफल वेलगिरी मोचरस सिंही मुहरा अतीस सोंठि कालीमिर्च पीपल धायके फूल घृतमें सिकी हर्ड कैथ अजमोद चित्रक अनारदाने इन्द्रयव धतूरेके वीज गजपीपल अफीम इन सबको बराबर लेय पहिले पारे गंधककी कजली करलेय फिर पोस्तके छिकलेके रसमें मिर्च बराबर गोली बनावे अतीसार संग्रहणीको दही या मठेमें या अर्कवेलके साथ देनेसे बहुत नफा होताहै।

अथ क्षुधासागर रस नं० ६७.

सोंठि कालीमिर्च पीपल त्रिफला पांचो नोन भुना सुहागा जवाखार सज्जी पारा शुद्ध गन्धक शुद्ध सिंही मुहरा ये सब बराबर ले पहिले पारे गंधककी कजली

मवात उदर रोग क्रस्ता कान नाक मुख जीभ रोग गलग्रह शिरशूल स्त्रीरोग सब जॉय (अनूपान)

मांस संग मिश्रीसंग मट्ठासंग जलसंग सुरा संग खाय तो वृद्ध भी तरुण होवे सौ स्त्रियोंसे भोग करे धातु बढे शरीर पुष्ट करे ।

अथ कुश्तासंगईसब नं ६१.

अव्वल टुकडे करके संग ईसबके अर्क केवड़ा और अर्क गुलाब और अर्क वेदमुश्कमें सौ सौ दफे आगमें गरम करके बुझाया जावे उसके बाद केवड़ा अर्क अर्क गुलाब और अर्क वेद मुश्क तीनोंको मिलाकर चालीस रोजतक खरल करे उसे खुश्क कर शीशेमें रख लेवे खुराक एक रत्ती मक्खनमें मिलाकर खावे खुश्की और गर्मीकी बीमारीको मुफीद है दिलको ताकत देता है ऊपरसे दूध पीना चाहिये और दिल दिमागकी ताकतके लिये १रत्ती सफेद इलायची वंसलोचन मिलाकर शहदमें खावे ऊपरसे अर्क वेदमुश्क दो तोला पिया जावे दिल धड़कनेके वास्ते बहुत फायदा करताहै ॥

अथ कपूरभीमसेनी नं० ६२.

१ शोरा कलमी २ तोले,२लाल चन्दन २ तोले ३ सफेद इलायचीके दाने २ तोले, ४ कबाबचीनी २ तोले, ५ रतनजोता१ तोले ६ केसर ८ माशे, ७ पोदी-

नेका सत्व ८३ माशे, ८ कपूर ४ तोले, ९ गुलाबका अर्क १० तोले ।

इन सब दवाओंको अलग २ पीस कर फिर सबको मिलाकर पीसले गुलाब डाल कर, थोड़ा गुलाब रहने देय टिकिया बनाकर फूलकी थालीमें रक्खै ऊपर फूलके कटोरेसे ढँकदर आटा लगाकर तले मोटी बत्ती से घीका दीवा जलाकर कपूर उडालेय फिर रहि जाय तो गुलाब डालकर टिकिया बनाकर उडालेय आँखके वास्ते फायदा करताहे और जियादा कीमतका बनाना चाहे और जमाना चाहे तो इस प्रकार दवा मिलावे कींदागोंद अथवा बबूलका गोंद १ एक तोले, कस्तूरी ८माशे,अम्बर६ माशे,इनको पीसकर मिलाके जमाले।

अथ मृगांककी विधि नं० ६३.

शुद्ध रांग एक छटांक भर शुद्ध गंधक छटांक भर शुद्ध पारा छटांक भर नौसादर छटांक भर पहिले पारा गंधककी कजली करे फिर सब दवाको मिलाकर खूब वारीक सुरमेकी तरह पीसे फिर धेला भर शोरा मिला कर आतशी शीशीमें भर कर कोयलोंमें रख कर दो सूपसे चारों तरफ धोंके कीलसे मुंह शीशीका खोलता जाय बंद न होने पावे जब रंग सुर्ख लूका निकले और कीलमें दवाका रंग मिस्ल सोनेके चमकदार होजावै तब

करै फिर अदरक रसमें सात पुट देय रत्तीभरकी गोली बनावे एक गोली लौंगके काढेमें देय तो हैजा और अजीर्ण दूरहो जिस कदर सेहत होवै उसी कदर दवा देरमें देवै पेट और पसलीके दरदको भी दूर करताहै और हाजमेंकी कुव्वत ज्यादा करता है।

अथ रसकपूरकी विधि नं० ६८.

शिंगरफसे निकाला हुआ शुद्ध पारा, गेरू, पुरानी ईंटकी सुर्खी, खरिया मिथ्री, फिटकरी, सेंधानोन, बांबीकी मिट्टी, खारीनोन, कबिस मिट्टी इन सबको अलग२ कपडछान करके फिर पारेको एक एक दवाईमें दोदो पहर खरल करै जिस दवाईमें खरल करै उसी समय फिर दूसरी दवाईमें दो पहर खरल करै ऐसेही सब दवाइयोंमें खरल करके फिर डमरूयंत्रमें ३२ पहरकी आंच देय चार लकडियोंकी, पारेमें एक एक दवा डालता जावै और दो दो पहर खरल करता रहे खुराक दो चावलसे एक रत्ती तक आतशक तथा कोढ़को तथा जिस कदर खूनकी बीमारी हो सबको दूर करता है। छोटीसी खांडकी टिकिया बनाकर उसमें दवा रखकर निगल लेना चाहिये यह दवा मुंहमें नहीं लगना चाहिये क्योंकि किसी किसीके मसूडे सूज जाते हैं और ताकतके वास्ते तथा खफीफ खूनके विकारके वास्ते

चन्दन सफेद घिसा हुआ लौंग वंसलोचन सफेद इलायची इन सबको दवाके बराबर मिला कर गोली बनाकर दूधके साथ खावे परहेज गुड़ तेल मिर्च खटाई नहीं खाना चाहिये और आतशक कोढ़ वगैरावालेको फकत चनेकी रोटी और घी बगैर निमक और मीठेके खाना होगी ।

अथ सोनामक्खी शोधन विधि नं० ६९.

तीन ३ पैसे भर सोनामक्खी और एक पैसा भर सेंधानोन दोनोंको जमीरेके अर्कमें तथा बिजौरेके अर्कमें आँचके ऊपर कढ़ाईमें घोटे करछुलीसे जबतक सुर्ख न होवे तबतक घोटे जाय जब खूब सुर्ख होजाय तब जानो शुधगई अगर सेंधानोन नहीं डाले तो भी कुछ हरज नहीं ।

अथ सोनामक्खी मारणविधि नं० ७०.

शुद्ध सोनामक्खी चार ४ पैसेभर, गन्धक एक १ पैसे भर अंडीके तेलमें एक १ पहर घोटकर सरवेका सम्पुट करे और ऊपरसे सरवेमें छेद करदेय और २ दो सेर कंडेकी आंच देय सिद्ध होजायगी ।

अथ मूत्रकृच्छ्र नं० ७१.

चंगपारा शुधी गन्धक इन सबको लोहेकेपात्रमें खरल

करै एक१ रोज सफेद दूबके अर्कमें घोटै एक रोज मुरैठीके काढेमें एक रोज गोखरूके रसमें एक रोज सेमरके रसमें खरल करै फिर मूषामें रखकर भूधरयंत्रमें फूक देय फिर पूर्वोक्त रसोंमें खरल करके तीन रत्ती रस सफेद दूब मुरैठी सेमरके रसमें दे और दूधकी खीरके साथ देय तथा प्रातःकाल शीतल जलके साथ देय एक खुराकमें दरद जाता रहेगा मूत्रके होतेही मनुष्य सुखी होवै।

अथ वज्रमूषा बनानेकी क्रिया नं० ७२.

दो भाग तिनकोंकी राख एक भाग बांबीकी मिट्टी एक एक भाग लोहेकी कीट एक भाग सफेद पत्थरका चूरा कुछ मनुष्यके बाल सबको बकरीके दूधमें औटाय दो पहर अच्छी तरह घोटै बादमें मिट्टीकी गौके थनके समान मूषा बनावै और उसीका ढकना बनावै दवा बंद करके ढकना बंद कर उसी मिट्टीसे उसकी संधें बन्द करदेय।

अथ भूधरयंत्र नं० ७३.

मूषेको बालूसे ढँककर ऊपरसे कंडोंकी आंच देदेय यह दवा रसराजसुन्दरसे देखकर लिखी तत्काल फल दिखलातीहै परीक्षा करके देखली हमने तजरबा किया।

अथ शीशा मारनविधि नं० ७४.

शुद्ध शीशेके चनेके दालके बराबर टुकड़े कर आठ तोले लेकर उसमें एक तोले मनसल डाल कर चौला-

ईके अर्कमें एक पहरभर घोटै फिर अडूसेके काढेमें एक पहर घोटकर टिकिया बनाय घाममें सुखाकर शराव सम्पुट करके गजपुटमें फूँक देय इसी तरह सात आंच देय भस्म होगा रंग काला होगा यह पेशावकी मर्जमें जीर्णज्वरमें और ताकतके लिये काम आताहै।

अथ मृतसंजीवनीवटीरससन्निपातपरनं॰ ७५.

शिंगरफका पारा शुधी दो२ टंक गन्धक शुधी तीन ३ टंक तांबेश्वर चार टंक सुहागा शुधी दो टंक सिंही-मुहरा शुधी एक टंक काली मिर्च चार टक पारा गन्धककी कजली करै फिर सब दवा डाल कर खरल करै ब्राह्मी रसकी एक पुट देय अदरककी दो पुट देय और सोंठि मिर्च पीपल औटाय उसके रसकी एक पुट देय फिर एक रत्तीकी गोली बनावै अदरकके अर्कके साथ खावै सन्निपात और मूर्च्छा दूर होय आमवात वायशूल विषमज्वर दूर होय।

अथ पारामारण नं॰ ७६.

पारा १ एक तोला और तेजाव गन्धकका पांच ५ तोला एक कुल्हैयामें पारा और तेजाव भरकर थोडेसे कंडे अलहदा सुलगादे जब धुँआ निकल जावे तब उस कुल्हैयाको कडों पर रखदे पारा खील होजावै तब उतार ले पारा सफेद खील होजायगा।

अथ पारा शोधनविधि वैद्यदर्पणकी रीतिसे नं० ७७.

पहिले अमलतासके गूदेके काढेमें दो २ रोज घोटै तो मल दोष दूर होय । फिर चीताके रस या काढ़ेमें दो २ रोज घोटै तो अग्निदोष दूर होय । फिर ढेला यानी अंकोलके बकलेके रसमें दो २ रोज घोटै तो विष दोष दूर होय । फिर घीगुवारके रसमें दो रोज घोटै तो सात कैंचलियोंका दोष दूर होय यह क्रिया मर्दनसंस्कार है। तिसके पीछे फिर डमरूयंत्रमें उड़ालेय। जब पारा मर्दनसंस्कारसे शुद्ध होजाय तब पारेको भूखा करनेके वास्ते और परतोड़नेके वास्ते और मुखकरनेके वास्ते और उपाय करै जो नौ ९ विष हैं उनमें शोधन करै वह विष ये हैं । वत्सनाग १ हारिद्रक जो हलदीमें होताहै २ शक्तुक ३ प्रदीपन ४ सौगष्ठक ५ शृंगक (सिंघिया) ६ कालकूट ७ हालाहल ८ ब्रह्मपुत्र ९ और सात उपविष ये हैं आकका दूध १ सेहुड़का दूध २ कलिहारी ३ कनैर ४ घुँगुची ५ अफीम ६ धतूरा ७ इन सबोंमें सात सात दिन घोटै फिर डमरूयंत्रसे उडालेय फिर लूनीयां १ भूमा २ जलपीपल ३ कुकरौंदा ४ इन सबमें सात सात दिन घोटै धूपमें सुखाय सुखाय घोटता जाय घोटै नहीं कुकरौंदा आदिका अर्क निकाल कर डोला

यंत्रमें पकावै चार४ पहरतक आंच दीवाकी लूकीसमान करै और चारों दवाइयोंका रस आध आधसेर एक १सेर पारेके लिये लेना चाहिये और डोलायंत्रके पकानेसे जो रस बाकी रहे उसमें उसी पारेको खरलमें डाल कर घोटते घोटते सुखा लेय फिर डमरूयंत्रसे उडालेय फिर उसी पारेको पूर्वोक्त रीतिसे औषधियोंके रसमें फिर मर्दनसंस्कार दे सो चौदह१४रोजतक करै इससे बहुत गुण होतेहैं फिर इसी भांति उत्थापन संस्कार करै पारेको घाममें सुखाय कर खरलसे निकाल लेय फिर नपुंसकत्व करनेकेलिये स्वेदनसंस्कार करै सेंधानोंन१सोंठि२मिर्च३ पीपल४ मूलीके बीज ५ अदरक राई ये सब दो २ छदामभर लेकर कांजीके पानीसे पीसकर चार तह कपड़ाकी करके उसपर लेप करै उस पारेको उसी कपडे पर रखकर पोटली बांध कर हांड़ीमें लटका देय और कांजीका पानी १५ पंद्रह सेर डाले तीन दिन धीमी २ आंच देकर स्वेदन करै इस क्रियाके करनेसे पारेमें दीपनशक्ति होतीहै और धातुको खाताहै फिर एक हांड़ीमें पारा रक्खै और कागजी निंबूका अर्क डालै १ एक दिन घाममें राखे फिर निकाल लेय फिर उस पारेको तौले जो पारा १६ सोलह पैसे भर होय तो नैनियाँगन्धक शुद्ध सोलह १६ पैसे भर डालै एक १ दिन घोट कर कजली करै उस

कजलीको गूमा और जल पीपलके रसमें २ दिन घोटै जब सूख जाय तब एक १ सेरकी एक बड़ी शीशीमें डालै और उस शीशीमें पहिले एक कपड़ौटी कर लेवे फिर धूपमें सुखाय शीशीको एक हांड़ीमें रक्खे और हांड़ीके नीचे पैसा बराबर छेद करे चौगिर्द मिट्टी लगावे तिसपर शीशी रक्खे तब वालू डाले हांड़ीके गले तक शीशीकी गर्दन वालूसे बाहर निकाले रहै और आठ पहर आंच देय दो लकड़ीकी चार पहर धीमी आँच देय फिर दूसरी चार पहर तेज आंच देय जब आपसे शीशी शीतल होय तब फोड़के पारेकी चांदी निकाल ले उस चांदीके पीछे जो गन्धक राख लगाहै तिसको छुरीसे दूर करे फिर उस चांदीको खरलमें डाल कर पीसे फिर गूमी और गजपीपलके रससे एक दिन घोटै जब सूखै तब पूर्वोक्त प्रकारसे शीशीमें डाल वालूयंत्रमें शीशीको रख चार पहरमन्द आंच देय जिससे अवशिष्ट गन्धक जल जाय गन्धकके जलेकी परीक्षा करे पहले पहर परीक्षा न करे दूसरे पहरसे लेकर तीन पहर तक परीक्षा करे ।

चन्द्रप्रभागूगल वैद्यदर्पणके मतसे नं० ७८.

१ कंचूर ४ मासे २ वच खुरासानी ४ मासे ३ मोथा ४ मासे ४ चिरायता ४ मासे ५ देवदार ४ मासे ६

हलदी ४ माशे ७ अतीस ४ माशे ८ भारंगी ४ माशे ९ पीपलामूल ४ मासे १० चीता ४ मासे ११ धनिया ४ मासे १२ आँवला ४ मासे १३ हर्र ४ मासे १४ वहेड़ा ४ मासे १५ चाव चार मासे १६ वायविडंग ४ मासे १७ गजपीपल ४ मासे १८ सोंठ ४ मासे १९ पीपल ४ मासे २० मिर्च ४ मासे २१ सोनामक्खीकी भस्म ४ मासे २२ सज्जी ४ मासे २३ जवाखार ४ मासे २४ सैंधा नोन ४मासे २५ विड़नोन ४ मासे २६ काला नोन ४ मासे २७ निसोत १६ मासे २८ दातौनकी जड़ १६ मासे २९ पतरज १६ मासे ३० तज १६ मासे ३१ सफेद इलायची १६ मासे ३२ वंसलोचन १६ से३३ साग३२ मासे ३४ मिश्री ६४ मासे ३५सत सिलाजीत १२८ मासे ३६ गूगलभैंसा११८मासे सब दवाई कपड़छान करके गूगल सिलाजीतका सत और मिश्री तीन छटाक त्रिफलेका काढ़ा करके उसमें चढ़ावै जब गाढ़ा होय तब पहिले सार डाले पाछे सब चूर्ण डाले तब फिर आठ पैसे भर घी गरम गरम करके डाले एक चिकने बरतनमें धर रक्खे पहिले हफ्ते मिजाजके माफिक जैसा माफिक आवे मोताज वैद्यके अधीन है प्रमेह मूत्रकृच्छ्र मूत्रबंध कोष्ठबंध पेटका फूलना कवजी लिंगकी गांठ मासकी जो देहमें पड़ी होय अंडवृद्धि आंधीपीर्प कमरशूल

काँससुआस छ्ई खुजली स्त्रीका रजोदोप स्त्रीका रज जो वंद होय तो खुल जावै आदमीका शुक्र दोप दूर हो भोजन करनेसे पहिले खाय ॥

शिंगरफ नं० ७९.

शिंगरफ शुद्ध काले धतूरेके बीजके तेलमें २१इकीस दफे खरल करै हर दफेमें आध पाव बीज धतूरेके सरवेमें ऊपर रक्खे और आध पाव बीज धतूरेके नीचे रखकर सम्पुट करके ऊपर सात कपडौटी करके सुखाले ५ पांच सेर भूवलकी आँचदे ज्यादे गरम न हो जिसमें बीज न जलने पावै खरल हर दफे ५ पांच घंटे होना चाहिये खुराक १ रत्ती पान या मलाई या मक्खनके साथ खावै नामर्दके वास्ते और बायेके वास्ते रासनाके काढेके साथ दे॥

दवा चन्द्रोदय नं० ८०.

पारा शुद्ध २० वीस तोले गन्धक शुद्ध २० तोले गन्धक शोधनेकी विधि पियाजके रसमें ४१ दफा शोधे । गन्धक और पारेको मिलाकर १ एक घोटैं वादको घीगुवारका रस डाल कर ४ पहर घोटे खरल में घोटकर सुखाले धूपमें नहीं रक्खे सुखलाकर आतशी शीशीमें भरदे शीशीका मुंह वन्द करके सात कपडौटी करे वालूयंत्रमें रखकर १२ वारह पहरकी

आंच दे बादमें शीशीमेंसे दवा निकाल कर फिर २० बीस तोले गन्धक मिलाकर ऊपरकी तरकीवसे घोटकर सुखलाकर शीशीमें भरकर वालूयंत्रमें १६ पहरकी आंच दे इसीतरहसे सात शीशी इसी दवाकी गन्धक मिला मिला कर ऊपरकी तरकीवसे घोट घोट कर चढाई जावेंगी लेकिन आंच हर एक शीशीकी ४ चार पहर ज्यादा वढ़ाई जावेगी यानी पहिली शीशीकी आंच १२ वारह पहर दूसरी शीशीकी आंच १६ सोलह पहर तीसरी शीशीकी आंच बीस २० पहर चौथी शीशीकी आंच २४ चौवीस पहर पांचवीं शीशीकी आंच २८ अट्ठाईस पहर छठी शीशीकी आंच ३२ वत्तीस पहर सातवीं शीशीकी आंच छत्तीस ३६ पहर इसी तरह बनाया जावेगा इसका रंग सुर्ख वानातकी तरह होगा और १ तोले चांदीमें १ मासे दवा डाली जाय तो सोना हो जायगा और खानेकी खुराक१ एक चावल पानमें या मलाईमें या मक्खनमें या सफेद इलायची पीसकर उसके साथ दवा फांकले दवा खानेके बाद १ घन्टे तथा २ घन्टे बाद दूध मिश्री डाल कर पिये नामर्द मर्द होवें जिसके पुत्र पैदा न हो उसके पुत्र पैदा हो और रोगोंमें अपनी बुद्धि अनुसार वरते ।

॥ श्रीरनमः ॥

अथ कुमार आसव (वैद्यदर्पणका) नं० १.

१ घीगुआरका रस	सेर १२
२ गुड	सेर ४
३ मधु	तोले ६६ मासे ८
४ लोहचूरण	" ६६ मासे ८
५ सोंठ	मासे १६
६ मिर्च काली	" १६
७ लौंग	" १६
८ तज	" १६
९ पत्रज	" १६
१० इलायची सफेद	" १६
११ नागकेसर	" १६
१२ चीता	" १६
१३ पीपल	" १६
१४ पीपलामूल	" १६
१५ वायबिडंग	" १६
१६ गजपीपल	" १६
१७ चाव	" १६
१८ कंकोल	" १६
१९ धनियां	" १६

२० सुपारी	माशे	१६	३३ पुहकर मूल	माशे	१६
२१ कटुकी	"	१६	३४ बीजबन्द	"	१६
२२ मोथा	"	१६	३५ कंघीके बीज	"	१६
२३ आमला	"	१६	३६ सेंधानोन	"	१६
२४ हर्र	"	१६	३७ किमाचकेबीज	"	१६
२५ बहेडा	"	१६	३८ गोखरू	"	१६
२६ रासना	"	१६	३९ सौंफ	"	१६
२७ देवदारु	"	१६	४० हींग	"	१६
२८ हल्दी	"	१६	४१ उटंगनके बीज	"	१६
२९ दारुहल्दी	"	१६	४२ गदासांठिदोनों	"	३२
३० भारंगी	"	१६	४३ लोध	"	१६
३१ मुलैठी	"	१६	४४सुवर्णमाखीकीभस्म		१६
३२ दातुन	"	१६	४५धायकेफूल	तोले	२१–४

इन सब दवाइनको कूटिके घीगुआरके रसमें डालै और मटुकामें भरदे मटुकाके मुँहपर पहिले सरवा रखकर फिर ऊपरसे तीन पत्ते अरण्डके रखकर फिर चार तह कपडा बाँधकर फिर ऊपरसे कपडमिट्टी करदे फिर मटकेको ४० दिन लीदमें गाड़ दे फिर निकालकर छान ले मोताज ४ माशेसे ३२ माशेतक भूखके वास्ते रोटी खानेसे पहिले उसको पीकर ऊपरसे रोटी खावे और पेटके दर्दके वास्ते जवाखार ख्वाह नकछिक

नीका खार मिलाकर ६ मासे अर्क १ मासे जवाखार मिलाकर देवै जियादाः दर्द हो तो १ तोले अर्क दो मासे खार देवे वायका दर्द हो तो सुवह शाम पिलावे जिसकदर मुवाफिक आवे, उसमें सिर्फ नमक सेंधा पडेगा खार नहीं ववासीर खूनी और वादी दोनोंको सेवन करनेसे नफा करताहै।

अथ द्राक्षादि आसव नं० ८२.

१ मुनक्का	पल १००	८ जावित्री	पल १
२ मिश्री	" ४००	९ चातुजात	" ४
३ वेरकीछाल	" ५०	१० त्रिकुटा	" ३
४ धायकेफूल	" २५	११ रूमीमस्तंगी	" १
५ सुपारी	" १	१२ अकरकरा	" १
६ लौंग	" १	१३ कूट	" १
७ जायफल	" १		

इन सबका चूरण करके इनसे चौगुणा जल डाल मटकेमें भर घोडेकी लीदमें जमीनमें गाड देय १५ दिन तक बाद निकालके भबकेमें अर्क खींच लेय भबकेमें इतनी दवा पोटली बाँधकर और डाल देय॥

१ कपूर	पल १
२ केसर	पल १
३ कस्तूरी	मासे ४

इस भाँति पोटली डाल कर अर्क खींच लेय और प्रातसमय २ पल मध्याह्नमें २पल सन्ध्यासमय ३ पल इस भांति खाय इसपर वहुत गरिष्ठ भोजन करै तथा स्निग्ध भोजन करैतो वीर्यकी वृद्धि होय और अधिक काम वढै और खांसी स्वांसके वास्ते सुवह शाम पिलावे जिस कदर मुवाफिक आवे और जिसमके वायु- के दरद वालेको सुवह शाम पिलावे जिस कदर मुवा- फिक आवे एक माशासे छटाँक भर तक पिया जावै।

अथ लघु विषगर्भतैल नं० ८३.

१ धतूरेके बीज व पत्तोंका अर्क तोले		२१	४
२ वकायनके पत्तोंका अर्क	"	२१	४
३ आकके पत्तोंका अर्क	"	२१	४
४ नीमके पत्तोंका अर्क	"	२१	४
५ असगन्धके पत्तोंका अर्क	"	२१	४
६ संजनेके पत्तोंका अर्क	"	२१	४
७ अरण्डके पत्तोंका अर्क	"	२१	४
८ मकोयके पत्तोंका अर्क	"	२१	४
९ सेहुँड़के पत्तोंका अर्क	"	२१	४
१० सिंघियाविष	"	२१	४
११ सोंठ	"	मासे	८

नीका खार मिलाकर ६ मासे अर्क १ मासे जवाखार मिलाकर देवे जियादाः दर्द हो तो १ तोले अर्क दो मासे खार देवे वायका दर्द हो तो सुबह शाम पिलावे जिसकदर मुवाफिक आवे, उसमें सिर्फ नमक सेंधा पडेगा खार नहीं ववासीर खूनी और वादी दोनोंको सेवन करनेसे नफा करताहै।

अथ द्राक्षादि आसव नं० ८२.

१ मुनक्का	पल	१००	८ जाविश्री	पल	१
२ मिश्री	"	४००	९ चातुजात	"	४
३ वेरकीछाल	"	५०	१० त्रिकुटा	"	३
४ धायकेफूल	"	२५	११ रूमीमस्तंगी	"	१
५ सुपारी	"	१	१२ अकरकरा	"	१
६ लौंग	"	१	१३ कूट	"	१
७ जायफल	"	१			

इन सबका चूरण करके इनसे चौगुणा जल डाल मटकेमें भर घोडेकी लीदमें जमीनमें गाड देय १५ दिन तक बाद निकालके भबकेमें अर्क खींच लेय भबकेमें इतनी दवा पोटली बांधकर और डाल देय॥

१ कपूर	पल	१
२ केसर	पल	१
३ कस्तूरी	मासे	४

अथ अर्कजंभीरी नं० ८४.

१ अर्क जंभीरी सेर	५	७ अजवाइन	" ३
२ हींग भुनी तोले	५–४	८ लौंग	" ३
३ पीपल तोले	३	९ वायविडंग	" ३
४ मिर्च काली	" ३	१० नोंन काला	" २४
५ सोंठ		११ नोंन सेंधा	" ३
६ राई			

इन सब दवाइनको कूट कपड़ छान कर फिर अर्क जंभीरीमें मिलाय देय फिर घीके वरतनमें २१ रोज घोडेकी लीदमें गाड देय फिर निकालकर छान-लेय पेटके दरदको और वदहाजमेंको वडा फायदः कर-ताहै मौताज अर्क ४ मासेसे १ तोले तक और जो अर्क छान कर दवा बचे उसको पीसकर दो चने बराबर गोली वनालेय वह भी मुताविक अर्कके फायदा करेगी और अर्क छान कर चीनी या कॉचके वरतनमें रक्खे और १५ रोजतक पहिले धूपमें रक्खे फिर छानकर सरदी न हो ऐसे मकानमें रक्खे पेटमें वायुका विकार हो उसको भी फायदः करताहै और दाड़िमी का अर्क भी इसी तरह वनाया जाता है न मुकाबिले जंभीरीके कम गरम है। हाजमेंमें और दर्द और दिल मचलानेको नफा करता है।और इसी तरकीवसे दाड़ि-

१२ पीपल	मासे	८	२२ कायफल	"	८
१३ मिर्चकाली	"	८	२३ पुहकरमूल	"	८
१४ असगन्ध	"	८	२४ पाढर	"	८
१५ रासन	"	८	२५ रेनुका	"	८
१६ कूट	"	८	२६ तज	"	८
१७ मोथा	"	८	२७ पत्रज	"	८
१८ बच	"	८	२८ इलायचीसफेद	"	८
१९ देवदारु	"	८	२९ लौंग	"	८
२० इन्द्रजौ	"	८	३० नागकेसर	"	८
२१ भारंगी	"	८	३१ तिलोंका तेल	सेर	ऽ२

पहिले तेल कढाईमें चढावे उसमें सब अर्क और विष डाल देय जब अर्क विष जल जाय तब तैलको छान लेय फिर सब दवाई दोसेर पानीमें घोलकर तैलमें चढा देय जब पानी जल जाय तब तैल छान लेय और इस तैलकी मालिश करनेसे फालज और गठियाको बड़ा फायदः होताहै और जिसममें जहां कहीं दरद हो मालिश करनेसे आराम होजायगा।तैल मलकर अरण्डके पत्ते बांध देय तब जियादः नफा होताहै ।

अथ अर्कजंभीरी नं० ८४.

१ अर्क जंभीरी सेर		५
२ हींग भुनी तोले		५-४
३ पीपल	तोले	३
४ मिर्च काली	"	३
५ सोंठ		
६ राई		
७ अजवाइन	"	३
८ लौंग	"	३
९ वायविडंग	"	३
१० नोंन काला	"	२४
११ नोंन सेंधा	"	३

इन सब दवाइनको कूट कपड़ छान कर फिर अर्क जंभीरीमें मिलाय देय फिर घीके वरतनमें २१ रोज घोडेकी लीदमें गाड देय फिर निकालकर छान-लेय पेटके दरदको और वदहाजमेंको वडा फायदः करताहै मौताज अर्क ४ मासेसे १ तोले तक और जो अर्क छान कर दवा बचे उसको पीसकर दो चने वरावर गोली बनालेय वह भी मुताविक अर्कके फायदा करेगी और अर्क छान कर चीनी या काँचके वरतनमें रक्खे और १५ रोजतक पहिले धूपमें रक्खे फिर छानकर सरदी न हो ऐसे मकानमें रक्खे पेटमें वायुका विकार हो उसको भी फायदः करताहै और दाड़िमीका अर्क भी इसी तरह बनाया जाता है न मुकाविले जंभीरीके कम गरम है। हाजमेंमें और दर्द और दिल मचलानेको नफा करता है।और इसी तरकीबसे दाड़ि-

मीका अर्क बनता है लेकिन अर्क जभीरी गरम है और अर्क दाडिमी गरम नहीं है और दिल मचलानेके वक्तमें और के आनेके वक्तअर्क जंभीरीसें अर्क दाडिमी ज्यादा नफा करताहै।

अथ गोली (शूल गज केसरी) नं० ८५.

१ कुचला शुद्ध मासे	६४	११ सोंठ मासे	८
२ कंजाकी मींगी "	१६	१२ हर्र "	८
३ हींग भुनी "	१६	१३ सज्जी "	८
४ सुहागाका फूला "	१६	१४ जवाखार "	८
५ अजवायन "	१६	१५ सेंधा "	८
६ पीपल "	८	१६ कालानोन "	८
७ पीपलामूल "	८	१७साँभर नोन "	८
८ चाब "	८	१८ खारी "	८
९ बेलकी गिरी "	८		
१० काली मिर्च "	८	१९ गंधकशोधापोंगीका	८

इन सब दवाइनको पीसकर अदरकके रसमें २ पहर घोटें फिर चने बराबर गोली कर लेवें और गरम पानीसें गोली खाय तो सर्व शूल जायँ पेटके दर्दको बहुत मुफीद है।

अथ गोली खांसीकी नं० ८६.

१ वंशलोचन	मासे	६
२ केशर	"	६
३ वहेड़ेकी वकली	"	६
४ लौंग	"	६
५ ककडासिंही	"	६
६कालीमिर्च	"	६
७ पीपल	"	६
८ इलायची सफेद	"	६
९ मुरेठी	"	६
१० कुलीञ्जन	"	६
११ कत्था	"	६
१२ कस्तूरी	"	१॥
१३ ववूलकी छालका अर्क	"	६४
१४ अदरकका अर्क	तोला १० मासे	८
१५ पान वँगला २५ का अर्क		

इन सब दवाइयोंको पीसकर उड़द वरावर गोली वना अदरकके अर्कमें खिलावे तो खाँसी वन्द हो-जाय पियाजके अर्कमें हैजेके वास्ते खिलावे ।

अथ गोली दार्मीवट नं० ८७.

१सोंठ	मासे	८
२जायफल	"	४

३ जावित्री	मासे	
४ इलायची सफेद	"	४
५ अफीम	"	२

दाड़िमी दो वडी कपड़मिट्टी करके आगमें पकालेय फिर सब दवाई मिलाकर पीस लेय मर्दके वास्ते झरबेरीके बेरके बराबर और बालकको चने बराबर गोली बना लेय जिसको गोली खिलावे दस्त बन्द हो जावेंगे गोली ऊपर लिखे बमूजिबसे छोटी बनावे जैसा बल देखे उसी कदर दे और जो कम फायदः हो दस्त बन्द न हों तो १ मासे हर्र और ४ रत्ती अजवाइन आध पाव पानीमें औटावे जब टके भर रहि जावे तब खूब टंढा करके सेंधा नमक डालकर इसके साथ गोली खिलावे, और हैजेमें खिलाई जाती है ।

अथ गोली अजीर्णानार नं० ८८.

१ जायफल	मासे	१६
२ इलायची सफेद	"	१६
३ लौंग	"	१६
४ अफीम	"	८
५ कस्तूरी	रत्ती	६

सबको पानीमें पीसकर १ चने तथा २ चने बराबर गोली बना लेय और नम्बर ७ के मुताबिक काममें

लावे अजीरण वा हैजेमें दी जातीहै जियादः अजीरण हो तो २ मासे हर्र १ मासे अजवाइन आधा मासा नमक लाहौरी आध पाव पानीमें औटा कर जब तीन पैसे भर रहे उसके साथ गोली खावे हैजेमें आध आध घंटेमें ठंडे पानीसे देय जब सेहत होने लगे तब वक्तसे देय।

अथ दवाई दादकी नं० ८९.

१ सुहागा	मासे १६
२ मालकांगनी	" १६
३ सीतलचीनी	" १६
४ पारा	" १६

इन सबकी कागजीके अर्कमें गोली बनाकर पानीमें घिसकर लगानेसे दाद जाता रहेगा।

अथ पीपल पाक नं ९०.

१ दूध	सेर ८६
२ पीपल	मासे ६४
३ पिस्ता	" ६४
४ बादाम	" ६४
५ गोला	" ६४
६ मुनक्का	" ८
७ वर्क चाँदीके	नग २०

८ तज	मासे ६
९ पत्रज	" ६
१० इलायची सफेद	" ६
११ नागकेशर	" ६
१२ वंशलोचन	" ६
१३ लौंग	" ६
१४ जटामांसी	" ६
१५ केसर	" ६
१६ जीरा सफेद	" ६
१७ जीरा स्याह	" ६
१८ चीता	" ६
१९ नागौरी असगंध	" ६
२० गिलोय	" ६
२१ सोंठ	" ६
२२ कालीमिर्च	" ६
२३ जायफल	" ६
२४ जावित्री	" ६
२५ गोखरू छोटे	" ६
२६ बेलका गूदा	" ६
२७ खस	" ६
२८ ख़ुरासानी अजवायन	" ६
२९ मूढ़	" ६

३० वग	मासे	६
३१ सार	"	६
३२ अभ्रक	"	६

पहिले पीपलको खूब महीन पीस कर फिर दूधमें डालकर खोवा कर लेय फिर छटांक भर घी डालकर खोवा भून लेय फिर दो सेर खांड़की चासनी करके खोवा समेत सव दवाई पीस कर चासनीमें मिला कर गोली पैसाभरकी तथा टके भरकी बनाकर दूधके साथ खावै तो वायके रोगोंको बहुत फायदः करै और शरीर पुष्ट करै।

अथ दवाई फालिजकी नं०९१.

१ लौंग	मासे	६४
२ कालीमिर्च	"	६४
३ २ पीपल	"	६४
४ अफीम	"	६४
५ घी गायका	"	९६
६ अक्करकरा	"	३२
७ कुलीञ्जन	"	३२
८ तिलसी पत्थर	"	३२

इन सब दवाइनको पीस कर तीन मौताज कर लेय एक बारमें मालिश करनेमें टका भर घी *गर्म* करके मिलावै उसको तालूके ऊपर *मालिश करके*

ऊपरसे ४ या ५ पत्ते अरंडके बाँध देय और रजाई उढाकर यह धूनी देय ।

दवाई धूनीकी.

१ गन्धक	मासे	३२
२ नौसादर	"	३२
३ मेथी	"	६४

सबको पीसकर ३ मौताज कर लेय मालिशके पीछे धूनी देय और हरताल फूककर खानेको देय ।

अथ शीतभंजीरस नं० ९२.

१ हरताल शुद्ध	माशे	३२
२ पारा	"	१६
३ गन्धक	"	८
४ मनसिल	"	४

पांच पैसा भरकी कटोरी एक तांबेकी बनवावे फिर सब दवा पीस कर कटोरीके भीतर दवाइयोंका लेप करदे फिर कटोरी हाँडीमें रखकर ऊपरसे वालू भर देय ४ पहर तेज आंच करे फिर कटोरीको निकाल कर पीस लेय मौताज १ रत्ती शहदमें मिलाकर जिसको शीतज्वर आता हो उसको १ पहर पहिले खानेको देवै और खानेको दूध भात देय, दवा करेलेके रसमें पीसी जावेगीऔर कटोरी सब दवाओंके बराबरहो यह

दवा घोर सन्निपातको भी अच्छा करतीहै प्रमाण आँचका जब वालूमें खील होजावै ।

अथ गिल्टी बैठजानेकी दवाई नं० ९३

१ पाखानभेद	मासे ३२
२ समुद्रशोप	,, ३२
३ तज	,, ३२
४ मेदा	,, ३२
५ कुचला	,, ३२
६ मुसव्वर	,, ३२
७ गूगल	,, ३२
८ आँबा हलदी	,, ३२
९ अकरकरा	,, ३२
१० सफेद घुँगुची	,, ३२
११ अफीम	,, ३२
१२ कालीमिर्च	तोले २६ –८

सबको पानीमें पीसकर ८ मौताज कर लेय सवेरेको गिल्टी पर १ मौताज बाँध देय फिर दूसरे रोज सवेरेको उसे खोल दूसरी मौताज बाँध देय ऐसे ७ सात आठ रोज बाँधे गिल्टी बैठि जायगी ।

अथ एलादि चटनी नं० ९४.

१	इलायची सफेद	मासे ४
२	लौंग फूलदार	,, ४
३	नागकेसर	,, ४
४	कंकोल	,, ४
५	खील धानकी	,, ४
६	गुढेलके फूल	,, ४
७	चन्दन लाल	,, ४
८	मोथा पीपल	,, ४
९	पीपल	,, ४
१०	मिश्री	,, १६
११	शहद	,, ३२

सबको पीसकर शहद और मिश्री मिलाकर अँगुलीसे, थोड़ी थोडी देर बाद कय आनेके ऊपरसे खिलावे।

अथ धातुपुष्टिकी दवाई नं० ९५.

१	बबूलकी फली	तोले १
२	तालमखाना	मासे ६
३	बीजबन्द	,, ३
४	मिश्री	तोले ३॥

बबूलकी फली बिना बीज छाँहीमें सुखाकर फिर

सब दवाओंको पीस कर छान लेय खुराक ६या७ मासे पावभर दूधके साथ खाय ।

अथ सुजाककी दवा नं ९६.

१ गोखरू दोनों	मासे	६४
२ सालमली	"	३२
३ ककडीके बीज	"	३२
४ खीरेके बीज	"	३२
५ कर्र	"	३२
६ काहू	"	३२
७ कुलफा	"	३२

सब दवा पीस कर खुराक १ पैसाभर पानीमे मिला कर फिर छान कर मिसरी डाल कर पीलेय ।

अथ चटनी सितोपलादि नं० ९७.

मिसरी	मासे	१६
वंसलोचन	"	८
इलायची सफेद	"	४
तज	"	२
पीपल	"	१

सबको पीसकर मिसरी मिलाकर सहत यास वंत अनारमें खावे बुखार या खुसकीको वहुत फायदा करतीहै तरावट करतीहै और भूखको वढाती है,

खुराक १ मासेसे २ मासे तक अगर ताकतके वास्ते चाहे तो मूँगेकी साख मोती चांदीके वर्क यह तीन चीजें और मिलाले ।

अथ माषादि मोदक नं० ९८.

१ दाल उडदकी धोईका आटा	तोले	१०-८	१५ वच	मासे	४
२ गेहूँका आटा	"	१०-८	१६ सोंठ	"	४
३ जौका आटा	"	१०-८	१७ पीपल	"	४
४ चावलकाआटा	,,	१०-८	१८ मिर्च काली	"	४
५ तज	मासे	४	१९ इलायची सफेद	,,	३
६ पत्रज	"	४	२० बंशलोचन	,,	३
७ लौंग	"	४	२१ केसर	,,	३
८ मूसली सफेद	"	४	२२ मोती	,,	१
९ बिलाईकंद	"	४	२३ गोला	,,	२४
१० कौंचकी जड	"	४	२४ बादाम	,,	२४
११ गंगेरण	"	४	२५ पिस्ता	,,	२४
१२ गोंदनीकी छाल	,,	४	२६ किशिमस	,,	२४
१३ गोखरू छोटे	"	४	२७ छुहारे	,,	२४
१४ वेलका गूदा	"	४	२८ घी	सेर	ऽ॥
			२९ खॉड छटाँक		ऽ॥। =

सब दवाई चूरण करके और आटा घीमें भून कर खॉडकी चासनी करके लड्डू छटॉक भरका बाँध लेय१

लड्डू खाय ऊपरसे पाव ऽ। भर दूध पी लेय तो शरीरको बहुत पुष्ट करे।

अथ शिंगार अभ्रक नं० ९९.

१ अभरककीभस्ममासे	१६	१३ गजपीपल मासे	१
२ चन्द्रोदय ,,	१	१४ तेजबल ,,	१
३ गन्धक ,,	१	१५ धायके फूल ,,	१
४ सार शिंगरफ ,,	१	१६इलायचीसफेद ,,	३
५ कपूर ,,	१	१७ जायफल ,,	३
६ खस ,,	१	१८ सोंठ ,,	४
७ बालछड ,,	१	१९ मिर्च काली ,,	४
८ लौंग ,,	१	२० पीपल ,,	४
९ तज ,,	१	२१ हर्र ,,	४
१० नागकेसर ,,	१	२२ बहेडा ,,	४
११ तालीस ,,	१	२३ आंवला ,,	४
१२ जावित्री ,,	१		

सबको पीसकर एक पहर पानीमें घोटै फिर चने बराबर गोली बनालेय और पैसेभर फालसाकी छाल शामको आध पाव पानीमें भिगोय देय सुबहको मलकर लुआब निकाल लेय मिश्री डाल कर एक गोली लुआबके साथ खाय तो पेशाबका जियादः आना बंदहो जाय और ताकतके वास्ते दूधमें खावे जीर्णज्व-

रके वास्ते गोलीको पीसकर सर्वत अनार ख्वाह शहतमें खिलावै वायुके रोगोंको अरण्डकी जडके काढेमें खिलावै, और खांसीको गोली वैसेही खिलावै.

अथ मूसलीपाक नं० १००.

१ मूसली सफेद	तोले२१-४
२ दूध गायका	शेर ऽ३॥।=
३ घी	आधसेर ऽ॥
४ खांड़	सेर ऽ १
५ गोंदबबूलका	मासे ३२
६ बादामकी गिरी	,, ३२
७ गोला	,, ३२
८ जायफल	,, १६
९ लौंग	,, १६
१० केसर	,, १६
११ चाव	,, १६
१२ डंवर	,, १६
१३ वालछड	,, १६
१४ कौंचके वीज शुद्ध	,, १६
१५ तज	,, १६
१६ पत्रज	,, १६

१७ इलायचीसफेद	मासे १६
१८ नागकेसर	,, १६
१९ मिर्च काली	,, १६
२० पीपल	,, १६
२१ सोंठ	,, १६
२२ जावित्री	,, १६
२३ सालव	,, १६
२४ चोवचीनी	,, ६४
२५ पिस्ता	,, ६४
२६ चिरोंजी	,, ६४
२७ कुलींजन	,, ८
२८ अजमोद भुना	,, ८
२९ पोदीनी	,, ८
३० मस्तगी	,, ८
३१ उसवा	,, ८
३२ मूँगेकीजड	,, ८
३३ कस्तूरी	,, ८
३४ मोती	,, ८
३५ वर्क चांदी	नाग १०
३६ वर्क सोने	,, १०

सब दवाई पीस लेय और गोंद भून लेय और मूस-लीको घीमें कोराय लेय और दूधका खोवा कर

लेय और खाँडकी चासनी कर लेय फिर सब दवाई और खोवा चासनीमें मिलादेय फिर अबरक ४ मासे और मिलादेय और सार ४ मासे मिलादेय और सब मिलाकर लड्डू टके भरका बना लेय खुराक टके भरकी पेशाब बहुत आती हो तो कमती आवै और ताकत करे और पुष्ट होय ।

अथ देहके बिगडनेमें चोबचीनी नं० १०१.

१ चोबचीनी	तोले	५
२ नागोरी असगंध	मासे	१२
३ मूसली सफेद	,,	१२
४ लौंग	,,	१२
५ जावित्री	,,	१२
६ कहरवा	,,	१२
७ वंशलोचन	,,	१२
८ चिड़ियाकन्द	,,	८
९ छतावर	,,	८
१० कौंचके बीजकी गिरी	,,	८
११ जायफल	,,	८
१२ अकरकरा	,,	८
१२ कूलींजन	,,	८
१४ केसर	,,	८

१५ अजवायन	मासे ८
१६ हालों	,, ८
१७ मेथी	,, ८
१८ मस्तगी	,, ८
१९ गोंद ढॉकका	,, ८
२० सतगिलोय	,, ८
२१ काला बिच्छू	,, ८
२२ इलायची सफेद	,, ८
२३ दालचीनी	,, ८
२४ पत्रज	,, ८
२५ इलायची लालके दाने	,, ८
२६ कमलगट्टेकी मींगी	,, ८
२७ तोदरी सफेद	,, ८
२८ जीरा गुलाबका	,, ८
२९ जीरा काला	,, ८
३० मूँगेकी जड	,, ८
३१ हिजारिलयहूद	,, ८
३२ डम्मर	,, ६
३३ वालछल	,, ६
३४ अगर	,, ६
३५ नदोली	,, ६

३६ किशिमश	मासे १६	४३ मोती	मासे ६
३७ बादामगिरी	,, ४८	४४ वर्कचांदीके	,, ९
३८ बहमन दोनों	,, १६	४५ वर्क सोनेके	,, ३॥
३९ पिस्ता	,, ४८	४६ अम्बर	,, २
४० चिलगोजा	,, ४८	४७ संगइसम	,, ४
४१ कस्तूरी	,, ३	४८ गोखरू बडे	,, ६
४२ उसवा	,, ११	४९ तालमखाने	,, ६

इन सब दवाओंको बारीक चूर्णकर शहतमें मिलाकर जिसमके खून विगडे हुएको खिलावें परहेज मिर्च खटाई गुड तैल ४० दिन तक दवा खानी होगी।

अथ आदमीकी सुस्तीकी दवाई नं० १०२,

१समुद्र सोख	तोले १३-४	६ खेडचीनी	तोले १३-४
२ विलाईकन्द	,, १३-४	७ माजूफल	,, १३-४
३सरफोंकाकीजड	,, १३-४	८ बाजकपूर	,, १३-४
४ कलौंजी	,, १३-४	९ वेलके फूल	,, १३-४
५ रासन	,, १३-४	१० नींबूके फूल	,, १३-४

इन सबको ब्राह्मीके अर्कमें पीसकर वेर बराबर गोली बनालेय एग गोली सुबह और एक गोली शामको खाय तो बल और पुष्टि करे और सुस्ती जाय ।

अथ बहुत पेशाब आनेकी दवाई नं० १०३.

१ वंशलोचन	तोले १	५ मुसली सफेद	,, १०-८
२ सालव मिश्री	,, १	६ फली बबूलकी	,, १०-८
३ समुद्र सोख	,, ५		
४ तालमखाने	,, ५	७ बिनौलेकीगिरी	,, १०-८

इन सबको पीसकर सबकी बराबर खाँड मिलावे खुराक मासे ९ से तोले १ तक और २ तोले रुब्बे-जामन यानी जामनकी शिकंजबी १५ तोले अर्क गाउ-जबाँके साथ १ खुराक खावे सुबह शाम दोनों वक्त तो बहुत पेशाब आना बन्द होय।

अथ बवासीरकी दवाई नं० १०४

१ निमकौरीकी गिरी	तोले ५-४
२ बकायनकी गिरी	,, ५-४
३ इमली कच्चीकी गिरी	,, ५-४
४ गुगल भैंसा	,, ५-४
५ मिश्री	,, २१-४

सबको पीसकर झरबेरीके बेर बराबर गोली बनावे सुबह शाम खाय परहेज कुछ नहीं।

अथ खुश्की दवाई नं० १०५

१ तज	माशे २	५ मुनक्का	मासे २
२ पत्रज	,, २	६ खस	,, २
३ इलायची सुर्ख	,, २		
४ चन्दन सफेद	,, २	७ मिश्री	,, १२

सबको पीस कर मिला लेवे पिलास बहुत होय तो खाँड़के शरबत छटाक भरमें दवाई २ माशे मिलाकर दिनमें दो चार दफे पिलावे थोडी पिलास होय तो शहदके साथ खाय ।

अथ विजयचूर्ण कब्ज पर नं० १०६.

१ बेल	माशे १६	११ सेंधानोन	मासे १६
२ अजवाइन	,, १६	१२ कालानोन	,, १६
३ बच	,, १६	१३ सामर	,, १६
४ चीता	,, १६	१४ बुरारी	,, १६
५ हींगभुनी	,, १६	१५ बढानोन	,, १६
६ अतीस	,, १६	१६ मूड़	,, १६
७ सौंफ	,, १६	१७ जवाखार	,, १६
८ पाढर	,, १६	१८ इन्द्रजौ	,, १६
९ चाव	,, १६	१९ सोंठ	,, १६
१० कटुकी	,, १६	२० पीपल	,, १६

२१ मिर्चकाली	मासे १६	२५ तज	मासे १६
२२ हर्र	,, १६		
२३ बहेडा	,, १६	१६ पत्रज	,, १६
२४ आंमला	,, १६	१७ इलायची सुर्ख	,, १६

सबको पीस कर गरम पानीके साथ खाय खुराक १ मासेसे ४ मासे तक और अतीसारके वास्ते मट्ठेके साथ खिलावे।

अथ आतशककी दवाइ नं० १०७.

१ सीमा	मासे १६
२ मनसल	,, १६

सीसाको करछेमें पिघलावे उस पर मनसल पीसकर डालता जावे जब शीशा भस्म हो जावे तब उतारलेय पान पर १ चावल रख कर खाय ४ चावल तक।

अथ सुस्तीकी दवाई नं० १०८.

१ वीरबहोटी	मासे १	५ शराब	पाव ऽ।
२ लौंग	,, ४		
३ जायफल	नाग ७	६ कानका मैल	मासे ॥
४ पान	,, १५	७ कबूतरका विष्टा	,, ४

सबको घोट शराबमें इन्द्रिय पर लेपे जो फुँसी हो जावे तो मक्खन लगावे।

अथ तालीसादि चूर्ण नं० १०९.

१ तालीस	तोले	१	१४ इलायची लाल मय वकले	तोले	१
२ अतीस	,,	१	१५ कचरी सेंधा	,,	१
३ नागकेसर	,,	१	१६ पीपलमूड	,,	१
४ अमलवेत	,,	१	१७ कचूर	मासे	१
५ पोस्तकावकला	,,	१	१८ चीता	,,	६
६ रूमीमस्तगी	,,	१	१९ सोंठ	,,	६
७ ककडासिंही	,,	१	२० पीपल	,,	६
८ दारमीके दाने	,,	१	२१ अजवायन	,,	६
९ समुद्रफेन	,,	१	२२ लौंग	,,	६
१० जवाखार	,,	१	२३ सेंधा नोन	,,	१६
११ सज्जी गुलाबी	,,	१	२४ काला नोन	,,	१६
१२ सुहागा कचा	,,	१	२५ बुडारी नोन	,,	१६
१३ पोदीना सूखा	,,	१	२६ सामर नोन	,,	१६

इन सबका चूर्ण हाजमें और दस्तके वास्ते जैसी ताकत देखे उतना खिलावे। सबको कूट छान कगजी केअर्कमें भिगोवे गोली ४ चने बराबर बाँधे।

अथ हाजमे और पेटके दरदकीदवाई नं. ११०

१ सौंफ	तोले	२	७ अमलवेती	मासे	६
२ मिर्च काली	,,	२	८ जवाखार	,,	
३ लौंग	,,	२	९ सज्जी गुलाबी	,,	
४ सेंधा नोन	,,	२	१० जीरा काला	,,	
५ काला नोन	,,	२	११ इलायची सफेद	,,	६
६ गन्धक औंलासार	,,	२	१२ चकोतरेका छिलका	,,	६

सबको कूटकर ३ दिन कागजीके अर्कमें घोटे फिर ४ दिन घीगुआरके पट्ठेमें घोटे खुराक १ मासेसे २ मासे तक

अथ जिगरी हरारत भूककी दवाई नं० १११

१ कोनैन	रत्ती	६	३ लोहेका कुश्ता	,,	६
	,,	६	४ बबूलका गोंद	,,	६

सबको पानीमें पीस कर गोली नग १२ बना लेय गोली १ पानीके साथ खावै ।

अथ धातु गिरनेकी दवाई नं० ११२

१ रांगका कुश्ता	मासे	३	५ सतशिलाजीत	मासे	३
२ इलायची सफेद	,,	३	६ मोती	,,	१
३ वंशलोचन	,,	३	७ वर्क चांदीके	नग	१२
४ सतगिलोय	,,	३			

सबको गुलाबके अर्कमें खरल करे खुराक नग २४ बना लेय दूधके साथ खावै ।

अथ लवणभास्करचूर्ण नं०. ११३.

१ समुद्र फेन	मासे ८	१२ चाव	मासे २
२ काला नोन	,, ५	१३ अमलवेती	,, २
३ बायविडंग	,, २	१४ जीरा सफेद भुना	,, २
४ सेंधा नोन	,, २	१५ धनियां	,, २
५ खारी नोन	,, २	१६ इलायची सुर्खकेदाने	,, २
६ पीपल	,, २	१७ इलायची सफेदकेदाने	,, १
७ पीपलामूल	,, २	१८ काली मिर्च	,, १
८ पत्रज	,, २	१९ सोंठ	,, १
९ जीरा काला	,, २	२० दारमीके दाने	,, ४
१० तालीस	,, २	२२ दालचीनी रत्ती	४
११ नागकेसर	,, २		

सबको कागजीके अर्कमें पीस लेय खुराक जितना मुवाफिक आवे।

अथ हुचकीकी दवाई नं० ११४.

१ छुहारा	मासे १	४ घी	मासे ६
२ मुनक्का	,, १		
३ मिश्री	,, १	५ शहत	तोले २

सब पीस मिलाकर थोडी २ देरमें खिलाई जावे।

अथ विडंगादिचूर्ण नं० ११५.

१ वायविडंग	मासे ३२	५ मिर्च काली	मासे ४
२ ककडासिंही	,, १६	६ अमल वेती	,, ३२
३ पोदीना	,, १६		
४ जंगीहर्र	,, १६	७ सेंधानोन	,, २८

सबको चूर्णकर मट्ठेके साथ या जैसा मौका होवे अजीर्णमें देवे।

अथ पेटके दर्दका नं० ११६.

१ समुद्र सोख माशे	१६	४ तज	मासे २४
२ मेदा लकडी	,, २४	५ मेथी	,, १६
३ हालों	,, २४	६ हल्दी	,, १६

सबको कूट पानीमें मिलाय पेटपर लेप करै कंडेकी आगसे सेंके ऊपरसे अरंडके पत्ते बाँधे पहिले हल्दीकी पोटलीसे सके अलसीके तेलमें डुबो डुबोके।

अथ अंग्रेजी दवा कलेजेके दर्दको नं० ११७.

१ पेन किलर–कलेजेके दर्दको तो पानी दश कतरे तक दिया जावे और जिसममें किसी जगह दर्द हो तो मालिश की जावे नफा होता है और हैजेमें भी दश बूंद थोडी थोडी देरमें देता रहै तब नफा होगा॥ और मामूली दस्त केको भी नफा करता है।

अथ दिमागकी रेजशकी दवाई नं० ११८.

घुसरायनमें काटेदार फल होताहै जिसको विन्दाल कहतेहैं वह लेना चाहिये उसका छिक्कल छुटाकर अन्दर से जाला निकालकर छः माशे पानीमें दशमिनट भिगो कर मल कर पानी नाकके रस्ते खींच लिया जावे अथवा घुसरायनका फूल दिमागकी रेजश निकालनेको भिगो कर सूँघे और ३ दिन तक खुश्क दाल रोटी खावे चिकनई न खाय और स्त्रीके गर्भ गिरानेको योनिमें वत्ती रक्खे । अथवा खूबकला दो माशे साफ करके चार पैसे भर मिश्रीका शरवत गरम करके उसके साथ फाँक लेवे तीनरोज चिकनई न खाय जुकाम बन्द जारी हो जावे और साफ हो जावे हरारत बुखार जाती रहे ।

अथ हुचकीकी दवाई नं० ११९.

१ इलायची	माशे १
२ वशलोचन	,, १
३ जहिरमुहराखताई	,, १
४ अगर	,, १
५ पोदीना खुश्क	,, १
६ पीपल	रत्ती ४
७ शरवत अनार	तोले २

यह दवा पीस कर मिलाकर थोडी२देरमें खिलावे।

अथ पिलानेकी नं० १२०.

१ पोदीना खुश्क	मासे	४
२ अगर	,,	२
३ इलायची सफेद मय छिकल	,,	४

यह दवाई पाउभर पानीमें जोश करके जब तीन पैसे भर पानी रहजाय तब थोडी२ देरमें पिलावै।

अथ चन्दन अवलेह नं० १२१.

१ चन्दन सफेद ६ पैसे भर गुलाबमें घिसै फिर डेढ़ सेर पानीमें घोल कर हॉडीमें रखदेय सुबहको २ टके मिश्री डाल कर अवलेह बना लेय गर्म मिजाज-वालेको खुश्की दूर करनेके वास्ते और पुष्टिके लिये ६ मासे रोज खिलावै।

अथ अंजन ऑखके जाले तथा धुन्धका न० १२२

१ शीसेकी गोली चलाई हुई	मासे	१६
२ पीपल छोटी	नग	७

शीशा पत्रकरके जीरेकी तरह काटकरपीपल डाल कर सुरमेकी तरह पीस लेवें और रातको सोते वक्त लगावें तो जाला धुन्ध दूर हो जावै।

दॉत दरद करते हो तो मंजन करै।

अथ बच्चोंके पसली चलनेकी दवाई नं० १२३.

१ तूतिया	मासे १
२ रीठा	" २

इनकी गोली बाजरे बराबर बनाकर घिस कर पिलावै इससे दस्त और कय आनकर आराम हो जायगा यह दवाई उस वक्त करै कि जिस वक्त किसी दवाईसे आराम न होता हो ।

अथ अर्क जामन नं० १२४.

अव्वल १ बोतलमें आँवलासार गंधक शुद्ध १ तोला और नौसादर १ तोला और सोरा १ तोला डालकर अर्क जामनका भर दिया जावे और बोतलमें डाट लगा कर फिर मिट्टीसे मुह बन्द करके धूपमें रख दी जावै ४० रात दिन रक्खी रहे जब तैयार होगी । खुराक १ माशेसे२ माशे तक जालन्धरवालेको ६ मासे दिया जावे दमा और तिल्लीको बहुत नफा करताहै ऊपरसे घी जियादः खाया जावे पेटके दरदको बहुत मुफीद है ।

अथ दाँतके दरदकी दवाई नं० १२५.

१ पोस्त ताड	तोले १०—८
२ पोस्त बबूल	" १०—८

३ पोस्त कचनार	तोले १०–८
४ पोस्त अनार	" १०–८
५ पोस्त वेरी	" १०–८
६ पियवाँसा	" १०–८
७ फिटकरी	माशे ८
८ वायविडंग	" ८

एक धडे पानीमें डालकर जोश दे जव आधा रह जाय तव सोते समय कुल्ही करे और दो तीन घंटे पानीसे परहेज करे ऐसी कुल्ही १५ या २० रोज करे और सिवाय सोते वक्तके और वक्तमें मुमानियत नहीं है और पाँच छे कुल्ही गर्म पानीसे जिस कदर मुह वरदायशकरे और पानीकी गरमी जव मुहमें कम होजावे तव कुल्हीका पानी मुँहसे वाहर निकाल देय फिर दूसरी कुल्ही करे ॥

अथ पेचिशकी दवाई नं० १२६.

१ मस्तगीरूमी	माशे ६	४ जीरा सफेद	मासे ३
२ वेखअंजवार	" ६	५ रेशाखतमी	" ३
३ मरोडफली	" ३	६ मिश्री	तोला १

पाव भर पानीसे जोश करे चहारम वाँकी रहे तव छानकर पी लेय मस्तगी रूमी मुवाफिक न हो तव कुन्दर डाले वजाय मस्तगीके ।

अथ तम्बाकूका नुसखा नं० १२७.

१ तमाकू	सेर ऽ२
२ दालचीनी लकडी	तोला ८
३ इलायची सफेद	" १॥
४ जायफल	" १॥
५ दारुचीनी	" ३॥
६ लौंग	" ३
७ इलायची सुर्ख	" ३
८ सन्दलका बुरादा	" १
९ जाफरान	" १
१० मुश्क	मासे ३
११ अम्बर	,, १
१२ पानका अर्क	तोले २१-४
१३ अर्क केउड़ा	,, २१-४

सबको पीस तमाकूमें मिलाय सायामें सुखाय लेय।

अथ कत्थाका नुसखा नं० १२८.

१ कत्था सफेद	सेर ऽ१	६ जावित्री	तोले
२ लौंग	तोला ३॥	७ गुलकंद	"
३ जायफल	,, १॥		
४ इलायची सफेद	,, १॥	८ इलायचीकलाँ	,, ३
५ दारुचीनी	,, ३॥	९ मुश्क	माशे

कत्था पीस अर्क केउडामें औटा लेय फिर सबको पीस कत्थामें मिलालेय पहिले सब दवा अर्क केउडामें घोट लेय तब मिलावे और १५ रोज तक बंदकर रक्खे फिर टिकिया बनाके या केउड़ेके फूलपर सुखाकर खुश्क कर लेवे।

अथ पेटके दर्दकी दवाई नं० १२९.

१ नमक लाहौरी	तोले २	११ हींग	तोले ४
२ नमक साँभर	,, १	१२ जीरा सफेद	,, १
३ नमक काला	,, ९	१३ जीरा स्याह	,, ४
४ नौसादर	,, ८	१४ दारुचीनी	,, १
५ अजमोद	,, ७	१५ लवकुरतम	,, १
६ मिर्च काली	,, ३	१६ जंजवील	,, १
७ मिर्च सफेद	,, ३	१७ मुलहटी	,, १
८ करफस	,, ३	१८ अनेसू	,, १
९ अफतीमून	,, ४	१९ नमकनकछिकनी	,, २९
१० सम्बुलतीव	,, ४	२० तेजाव गन्धक	,, ८

सबको पीस मिलाय कर १ बोतलमें भर मुँह बोतलका खूब बंद करे और ४० दिन जमीनसे गाड़ देय फिर दर्द भूख हाजमेंको ४ रत्तीसे मासे तक खिलावें सुबहको और कुव्वतेबाहको बढावे।

अथ खांसीकी दवाई बच्चोंकी नं० १२०.

१ बहेड़ेकी बकली	मासे	६
२ मोरेठी	,,	६
३ अकरकरा दक्षिणी	,,	६
४ काकडासिंही	,,	६

यह सब पीस कपडछान कर अनार खाली कर उसमें भर ऊपर मिट्टीसे लेपदेय फिर कंडेके दहरमें रखदेय जब उफनके आजाय तब निकाल लेय फिर

५ शहत	तोले	२
६ दूध बकरीका	,,	२–८
७ मूंगा	,,	३

इन सबको भी खूब पीसके ऊपरकी दवायोंमें मिलायके अनारमें भरे जब दवा अनारके अन्दर पकने लग जावे तब उतार कर हिस्ब ताकत खिलावें ।

अथ सांप काटेकी दवाई नं० १२१.

हुक्केकी कांयट एक चने बराबर गोली बनाकर खिलावे फौरन अच्छा होगा वेहोश होय तो आंख में लगावे होशमें आजायगा तब खिलावे

अथ स्त्रीके गर्भ रहनेकी दवाई नं० १२२.

एक पान बंगला एक लौंगअफीम एक रत्ती सबको पीसकर चने बराबर गोली बनावे पानी न डाले और

जब स्त्री धर्मसे निवृत्त होकर चौथे दिन स्नान करे तब सुबहोको गंगाजलके साथ खावे उसी रोज स्त्री प्रसंग करे तो गर्भ रहे फर्क नहीं पड़ेगा।

अथ दमा व खाँसी व धातु पतली व सुस्तीकी दवाई नं० १३३.

आककी बहुत पुरानी जड मँगवा कर सायामें खुश्क करके फिर उसकी मिट्टी साफ करे उसके बाद एक नादमें ख्वाह जमीनमें गढा खोद कर उसको जला दिया जावे जब जल जावे तब उसको ढक दिया जावे उसके कोयले और राख हो जावैगी राख दो चावल पानमें रख कर खिलावें केसीही खांसी हो रफा हो जावैगी और कोयले पीस कर एक बोतलमें भर मुँह बन्द करके मिट्टीमें एक गमलामें गाड़ देय और दोनों वक्त छे मास तक उस मिट्टीमें पानी डाला जाय बादको निकाल लेय और फिर रख·लेवे दो चावल गायके दूधकी मलाईके साथ खावें सुहबतसे परहेज करे और खांसी व श्वास पर भी ऊपरकी तरकीबके मुताबिक बहुत नफा करती है मुजर्रिब है॥

अथ कुब्वेतवाह व प्रमेहकी दवाई नं० १३४.

तुख्मबेल नीम पुख्तः[1] के करीब ऽ२॥सवा दो सेरके निकाल कर उसका रोगन निकलवा लेवें और खुराक

१ तुख्मबेल नीमपुख्त· यानी अधपके बेलके बीज।

१ मासेसे ९ मासे तक खावै यानी अव्वल रोज १ एक मासे दूसरे रोज २ दो मासे इसी तरह नौ रोज १ एक मासा इजाफः करे कुल अठारह रोज इस्तेमाल करै फी खुराक निस्फ माशः मिश्री भी डाल लिया करै तरकीब रोगन निकालनेकी यह है बेल नीम पुख्त लेकर मय गूदा पानीमें चढावे जब उबाल आ जाय तब उतार कर बीज यानी तुख्म निकाल कर कोल्हूमें पिरवा कर रोगन निकाल लेवें।

अथ सुजाककी दवाई नं० १२५.

कत्था सफेद माजू इतर सन्दलमें चनेःबराबर गोली बनावै एक गोली सुबहको पानीसे खाई जावैगी।

अथ प्रमेहकी दवाई नं० १२६.

सेंबलकी मूसली कूटकर ३ तीन मासे और३ तीन मासे शक्कर मिलाकर गायके दूधसे खावे।

अथ आतशककी दवाई नं० १२७.

पपड़िया कत्था सफेद साफ किया हुआ माजू दो अदद इलायची सफेद चार अदद इनको बारीक पीस कर पहिले जख्म धोकर मक्खन लगावे फिर दवा, खुश्क लगावे एक घंटेमें सेहत मालूम होगी दो तीन रोजमें अच्छा होजावैगा।

अथ बवासीर खूनी या बादी कैसीही हो दवाई नं० १३८.

स्याह जीरी ३ तीन तोले स्याह मिर्च १ तोले खूब बारीक पीस कर पानीमें गोली बाँधे खुराक जहाँ तक होसके १ तोलसे जियादः खावे दो तोले तक पानीसे ख्वाह गायके दूधसे खावे मालाई दही न खावे सात रोज तक खावे।

अथ गठिया व दरदकी दवाई नं० १३९.

अव्वल सिंघिया जहर २ दो तोला पीस कर रख-लेवै फिर पाव ऽ। भर तिलका तेल उसमें मालकँगनी एक धेलाकी और अफयूँ एक पैसेकी डालकर कढाई पर चढाकर आँच देय जब मालकँगनी और अफयूँ जल जावै तब कढाईको उतार कर ५ मिनट बाद सिंघिया डाल कर मिलावै धुयेंसे बचा रहे रोगन तैयार होगया। फालिज गठिया हाथ पैर जिसके सूख गये हों तीन साल तकके मरीजको सेहत करेगा। रातको मकानके अन्दर मालिस करै बादको बरगदके पत्ते पर रोगन लगाकर चिरागपर गरम करके सेंक देय फिर वही पत्ते बाँध देय रुअड रखकर सुबहको उठनेसे एक घंटे पहले खोलैं और पसीना पोंछ कर मालिश रोगनकी कर दे फिर एक घंटे बाद उठे सेहत हो जावेगी।

अथ शरवत नं० १४०पेशावज्यादा अने

१ गुलाबासकेबीज तोले १	४ गुलाव तीनपाव
२ अनार कली " १	५ कन्द तीनपाव
३ मस्तगी " १	इनसबकाशरवतबनाले

अथ फंकी नं १४१ पेशाव ज्यादा आनेव

१ वव्बुलकी पत्ती मासे १	१० कनेरगान मासे
२ कतीरा " १	११ मूँगाकीजड़ "
३ कहू " १	१२ धनियाँ " २१
४ वव्बुलकी फली " १	१३ राँगकुश्ता " २१
५ गोंद " १	१४ अजवाइनखुरा २१
६ मोती "३॥	१५ इमलीकच्ची "२१।
७ चन्दन सफेद "३॥	१६ जाउचीकेबीज "२१।
८ गुलेंअरमनी " १॥	१७ शालममिश्री " २१।
९ सतसुपारी " १॥	

सवके वरावर मिश्री सबको पीसकर फंकी वनावे

अथ अर्क नं १४२ फंकीके साथका.

१ धनियाँ तोले ३	५ गिलोयहरीतोले १०-८
२ चन्दन सफेद " ३	६ गुलेगाहजुवाँ तोले ३
३ गुलावके फूल " ३	७ अजवाइनखुरासानी"२
४ सेवतीके फूल " ३	८ मस्तकी " १

९ कंघी तोले १०-८	१४ जामनकेपत्ते तो. २१-४
१० गुलाबका जीरा ,, २	१५ मिश्री ,, २१-४
११ मूसली स्याह ,, २	१६ खारनिम्बू मासे १॥
१२ बीजबन्द सुर्ख ,, ३	१७ अनारकीक लीतोले ५
१३ ब्राह्मी ,, ३	१८ कसेरू ,, १०-८

सब दवायें आगपर चढाकर अर्क खींच लेय ५६ सेर, तरकीब खानेकी फंकी मासे ९ और शरबत तोले २ और अर्क तोले १२ सबको शरबत और अर्कके साथ फंकी खाय। पेशाब ज्यादा आना बन्द हो।

अथ नामर्दीकी दवाई नँ० १४३.

१ बीरबहूटी मासे ३२	६ मछलीकापित्तामासे ३२
२ हांथीदांत ,, ३२	७ घुँगुची लाल ,, ३२
३ लौंग ,, ३२	८ घुँगुची सफेद ,, ३२
४ जायफल ,, ३२	९ सुअरकी चरबी ,, ३२
५ मीठा तेलिया ,, ३२	१० ऊसरसांडे नाग १०

सब दवा पीसके उसमें ऊसडसांडे डाल देय फिर हांडी चिकनीमें भरे और हांडी तले छेद करे उसमें सींक लगाय देय उसके नीचे एक बरतन रख देय ऊपरसे आरने कंडोंकी ऑच देय फिर तेल निकाल लेय तेल लगाके पानको बांध देय नामर्द आदमी मर्द होय।

अथ घुसरायन जुकामपर नँ० १४४.

घुसरायनके फलका छुलका उतारकर फूल रहिजावे उसका गुण ॥ एक फूल भिगोकर सूँघे जुकाम जारी होकर दिमाग साफ होकर हलका होजावैगा और पागलको सुँघाया जावे तब पागल अच्छा होगा, और पेटके कीडे ५ फूल पिलानेसे पानी होकरजाते रहेंगे । और ५ फूल पीस कर बत्ती बनाके औरतकी भगमें रक्खे सात दफा भिगोकर गर्भ गिर जायगा॥ घुसरायन बिंदालका फल काटेदार होताहै वो लेना चाहिये ज्यादातरयह फल मथुरावृन्दावनकी तरफ होताहै ।

अथ छतावरका घी नँ० १४५.

१ छतावरकाअर्क	तोले	६४	१० मुरेठी	तोले	४
२ घी	,,	६४	११ मुनक्का	,,	४
३ दूध	,,	६४	१२ जीवनी	,,	४
४ असगन्ध	,,	८	१३ पीपल	,,	४
५ छतावर	,,	८	१४ शहद	,,	४०
६ वाराही कन्द	,,	८	१५ खरेटी	,,	४५
७ विदारी कन्द	,,	८	१६ हुलहुला	,,	४
८ कौंचके बीज	,,	४	१७ मिसरी	,,	४०
९ इलायची सफेद	,,	४			

पहिले अर्क शतावर घी दूध शहद मिसरी अलाहदा रक्खे और सब दवा कूटछान कर १० सेर पानीमें औटावे जब चौथाई पानी रह जावे तब उतारकर छानले फिर घी दूध अर्क शतावर और पानी सब दवाका निकला हुआ कढ़ाईमें डालकर पकावे जब घी रहिजावें तब छानकर शहत मिसरी मिलाय दे खुराक १ तोले पेशाब ज्यादा आने और खूनके विकारको और ताकतको फायदा करताहै ।

अथ सुस्तीकी दवाई नं० १४६.

सफेद कन्हेरकी छाल पैसाभर सफेद गुंजा पैसाभर संखिया त्रिमासही गायका दूध४ चारसेर अवटि बांटि दवा डार जामन दे मथनिकर नेनु तब पासही॥इन्द्रिय पर लेप करे बंगला तब पान धरे बाँधे दिन सात राति मिटे ढीलता सही । कड़ो होय बडो खड़ो चढो सर्व काल अड़ो अष्टयाम वामसंग कामको विलासही ॥ १ ॥

१ सफेद कन्हेरकी बकली१॥)२सफेद घुँगुची १॥) ३ संखिया विष ३ माशे ४ गायका दूध ऽ४ सेर ।

अथ जहर बिच्छू व सांप व अफीमकी दवाई नं० १४७.

कपासकी पत्ती पाव ऽ।भर पानीमें पीसकर पिलावे अच्छा होजावैगा ।

अथ हरकिसमके जहर खानेकी दवाई नं० १४८.

पन्ना मणीको पानीमें घोय कर दो तीन दफेमें पिलावै फौरन अच्छा होजावैगा ।

अथ गिलट कोढकी दवाई नं० १४९.

विसखपराका रस चावल धोवन मिलाय कर दिन २१ पिलावे अच्छा होजावेगा ।

अथ सपेद दागकी दवाई नं० १५०.

लीलाथोथा सेंजनेके वीज पानीमें घिसकर लगावे तो सपेद दाग जॉय ।

अथ विच्छूके काटनेकी दवाई नं० १५१.

१ फिटकरी सपेदका फूला रत्ती लेकर चार कतरह पानीमें घोलकर दोनों आंखमें डालनेसे फोरन् अच्छा होताहै जादूका असर रखताहै ।

अथ चूर्ण हाजमेका नं० १५२.

१ हर्र	तोले	१६	६ नोन काला	मासे	८
२ सोंठ	"	१६	७ नोन सेंधा	"	८
३ आंवला	"	१६	८ नोन खारी	"	८
४ हींग भुनी	मासे	८	९ नोनसांभर	"	८
५ सुहागाका फूला	दाम	१२॥	१० नोन वुडारी	"	८

हर्र सोंठ आंवलाको तीन दिन भिगोकर महीन पीसकर कढाईमें चढाकर भुन लेय फिर और सब दवा पीसकर उसमें डालदे फिर झरबेरीके बेर बराबर गोली बनाले।

अथ घुंटी बच्चोंकी नं० १५३.

सौंफ	मासे १	११ अजवायन	मासे १
पोदीना	" १	१२ मुरैठी	" १
काकडासिंही	" १	१३ सुहागाकच्चा	" १
सोंठ	" १	१४ अमलतास	" ४
पीपल	" १	१५ नोन काला	" १
६ त्रिफला	" १	१६ मुनक्का	" १
७ सनाय	" १	१७ सहत	" १
८ पित्तपापडा	" १	१८ निसोत	" १
९ पलाशपापडा	" १	१९ एलुआ	" १
१० अजमोद	" १	२० हींग	रत्ती१

अथ चूर्ण हाजमेंका दूसरा नं० १५४.

त्रिकुटा	माशे ४८	५ नोन काला	माशे १६
जीरा दोनों भुने	" ३२	६ गन्धक शुद्ध	" १६
नोन सेंधा	" १६	७ सुहागाकाफूला	" १६
नोन सांभर	" १६	८ हींग भुनी	" ८

सबको पीसकर कागजीके अर्कमें घोटै ॥ रत्ती ४ खाय तो हाजमा करे ।

अथ दवा दरद तथा हाजमेंकी नं० १५५.

नोन संधा ऽ। पावभर अर्क सैंजने ऽ।।। तीन पाव सबको खरलकरके गोला बनाकर और सुखाकर सम्पुट करके गजपुटमें फूंकदेय खुराक ६ मासे गरम पानीके साथ खावे दरद तथा हाजमेंको वहुत नफा करताहै।

अथ तिल्ली तथा पेटके दरदकी दवाई नं० १५६

१ तेजाब गन्धकका	तोले १
२ सोरा कलमी	तोले ४
३ हीरा कसीस हरा	मासे ४
४ कोनैन	" ४
५ सत फोलाद	" ४

सबको ऽ।।। तीनपाव पानीमें मिलाकर एक शीशी-में रक्खे खुराक ४ तोलेसे ८ तोले तक तिल्ली और दरदवालेको पिलावें फौरन अच्छा होगा तिल्ली सात या कुछ ज्यादे दिनमें अच्छी होगी तथा तिल्लीवालेको चिरचिटा घुन्डीवाला चिरचिटेकी घुन्डी सुखाकर एक हांडीमें रखकर आग लगादे राख होजावेगी खुराक मासे ६ लेकर उसके बराबर बूरा मिलाकर पानीके साथ खिलावे ।

अथ हैजेकी दवाई नं० १५७.

नोन सेंधा सेर ऽ१	५ सीरा तीन पाव ऽ॥।
फिटकरी तीनपाव ऽ॥।	६ हीराकसीसहरा ऽ॥।
नौसादर डेढ़पाव ऽ। =	७ इलायचीलालतोला १०
सुहागा आधसेर ऽ॥	८ सोडा " १०

सबको कूटकर एक हाँडीमें भरे लेकिन हाँडी बडी हो सिर्फ दो अंगुल खाली रहे उसके मुँहपर एक कुंड रखे जिसके पेटमें छेद करके एक नली लगावे भट्टीके बरतनमें अर्क निकाले तले हाँडीके तेज आँच दे तेजाब निकलेगा छः या सात बूंद पानीके साथ ना संग्रहणीके वास्ते एक तोला आंवला रातको भिगोयकर सुबहको घोटकर दस बून्द डालकर पिलावे १० दिन तक।

अथ औरतके खून बन्दकरनेकी दवा नं० १५८

खरेटीकी जडीकी छाल मासे ६ औटायकर मिसरी डालकर पिलावे खून बन्द हो जावेगा।

अथ आँख दुखनेकी दवाई नं० १५९.

फिटकरी	रत्ती १
मिसरी	मासे १
गुलाबका अर्क	तोला २

सबको पीसकर कागजीके अर्कमें घोटै खुरा रत्ती२४ खाय तो हाजमा करे ।

अथ दवा दरद तथा हाजमेंकी नं० १५५.

नोन सेंधा ऽ। पावभर अर्क सेंजने ऽ।।। तीन पा सबको खरलकरके गोला बनाकर और सुखाकर सम्पु करके गजपुटमें फूँकदेय खुराक ६ मासे गरम पानीके साथ खावै दरद तथा हाजमेंको बहुत नफा करताहै ।

अथ तिल्ली तथा पेटके दरदकी दवाई नं० १५६

१ तेजाब गन्धकका	तोले १
२ सोरा कलमी	तोले ४
३ हीरा कसीस हरा	मासे ४
४.कोनैन	" ४
५ सत फोलाद	" ४

सबको ऽ।।। तीनपाव पानीमें मिलाकर एक शीशीमें रक्खे खुराक ४ तोलेसे ८ तोले तक तिल्ली और दरदवालेको पिलावे फौरन अच्छा होगा तिल्ली सात या कुछ ज्यादे दिनमें अच्छी होगी तथा तिल्लीवालेको चिरचिटा घुन्डीवाला चिरचिटेकी घुन्डी सुखाकर एक हांडीमें रखकर आग लगादे राख होजावेगी खुराक मासे ६ लेकर उसके बराबर बूरा मिलाकर पानीके साथ खिलावे ।

ाले जाडा आनेसे घंटे ४ पहले १ गोली खिलावे
र १ गोली घंटे १पहले खिलावे जाडा बुखार बंद
जावैगा अगर गोली और तेज करना हो तौ करे-
की पत्तीऽ–छटाक डाले गोली न खुसकी करेंगी
पिआस लगेगी।

अथ दस्तोंकी दवा नं० १६५.

जामुनकी गुठली मासे४पानीके साथ खिलावे दस्त
न्द हो जावैंगे तथा पेशाब ज्यादे आते हों तौ मासे४
नीके साथ खिलावे तो पेशाब कम हो जावैंगे तथा
ोडेको दस्त आते हों तौ आधपाव ऽ= जामुनकी
ठली खिलावे तौ घोडेके दस्त बन्द हो जावैंगे।

अथ हाजमेकी दवा नं० १६६.

गन्धक पोंगीका पाव ऽ। भर नौसादर डेढ पाव
। = खार मूलीका आधपावऽ = खार चिरचिटेका छ-
ाक भरऽ–सबको पीस कर हांडी डमरूयंत्रमें उडाले
ांच पहर४ की देय दरदके वास्ते तथा हाजमेके वास्ते
हुत फायदा करता है वैसेही खाये तथा गरम पानीके
ाथ खाये खुराक १ मासेसे२मासे तक किसी हालतमें
ुकसान नहीं करेगा तथा गरमी नहीं करेगा।

अथ कब्जकी दवा नं० १६७.

बेल अदद४०जो पुख्तादां गूदा लेकर बीज निकाल

सबको पीस मिलाकर दो दोबून्द आँखमें डा अच्छी हो जावेगी ।

अथ प्रदर रोगकी दवा नं० १६०.

चूहेकी मिंगनी मासे २ दूधके साथ पिलादे कैसेह खून जाताहो बंद हो जावैगा ।

अथ वायशूल दरदकी दवा नं० १६१.

१ वारूद मासे ८
२ पानी ,, ३२

अडूसाका अर्क जिसको विसौंटा कहतेहैं बून्द५ सब मिलाकर पिलादे तुरंत आराम हो जावैगा और वोडे को एक टका वारूद सराव आधपावऽ=मिलाकर पिलावै तुरंत आराम होजावैगा ।

अथ फोडा वैठानेकी दवा नं० १६२.

विजैसारका गोंद पानीमें पीस कर लगावै तो फोडा तथा वद दोनों तुरन्त वैठ जावेंगे ।

अथ पुराने जखमपर लेप नं० १६३.

सॉपकी केंचक आँवाहलदी मठामें पीसकर मरहम वनाले दो दफाके लगानेसे अच्छा हो जावे गा ॥

अथ गोली जाडे वुखारकी नं० १६४

करेलेकी पत्ती ऽ=छटांक कपूर मासे४ काली मि मासे ६ सवको पीस कर गोली झरवेरीके वेर वराव

ाले जाडा आनेसे घंटे ४ पहले १ गोली खिलावे र १ गोली घंटे १पहले खिलावे जाडा बुखार बंद जावैगा अगर गोली और तेज करना हो तो करे- की पत्तीऽ–छटाक डाले गोली न खुसकी करेंगी पिआस लगेगी।

अथ दस्तोंकी दवा नं० १६५.

जामुनकी गुठली मासे४पानीके साथ खिलावे दस्त न्द हो जावेंगे तथा पेशाव ज्यादे आते हों तो मासे४ ानीके साथ खिलावे तो पेशाव कम हो जावेंगे तथा ाडेको दस्त आते हों तो आधपाव ऽ= जामुनकी ठली खिलावै तो घोडेके दस्त बन्द हो जावेंगे।

अथ हाजमेकी दवा नं० १६६.

गन्धक पोंगीका पाव ऽ। भर नौसादर डेढ पाव ।= खार मूलीका आधपावऽ= खार चिरचिटका छ- ाक भरऽ–सबको पीस कर हांडी डमरूयंत्रमें उडाले ांच पहर४ की देय दरदके वास्ते तथा हाजमेके वास्ते हुत फायदा करता है वैसेही खाये तथा गरम पानीके ाथ खाये खुराक १ मासेसे२मासे तक किसी हालतमें ुकसान नहीं करेगा तथा गरमी नहीं करेगा।

अथ कब्जकी दवा नं० १६७.

वेल अदद४०जो पुख्ताहों गूदा लेकर बीज निकाल

डाले फिर हर्रे बड़ी अदद४०पीस कर दो सेर पा
औटावै जब आधसेर पानी बाकी रहे तब उतार ले
र्ही दो सेर पानीमें किसमिस आधसेर औटावै
आधसेर बाकी रहे तब उतारले और सब बगैर छनी
वेलके गूदेमें मिलाकर छानले पहले सबको रात
रखकर सुवहको छानै फिर उसको चीनीके पियाल
रखकर सुखा ले अगहनके महीनेसे १ तोले रात
दूधके साथ चार महीने तक खावै कब्ज जाता रहेगा
अधिक पुष्टि करेगा फिर दूसरी साल खावै ।

अथ तेल हरकिसमके दरदका नं० १६८

तेल मिट्टीका अव्वल दरजेका १ बोतल कपू
तोला हलदीकी गांठि अदद ६ घीमें भूनकर काली
८ मासे सब दवा मिलाकर मिट्टीके तेलमें मिला
१ बोतलमें भर ले शिरके दर्दको तथा जिस ज
जिस्मके ऊपर दरद हो सबको फायदा करताहै ।

अथ आंखसे पानी गिरनेकी दवा नं० १६

गेरू १ तोला शोरा ४ तोला चार रोजतक खा
खरल करै फिर एकरोज कांसेके बर्त्तनमें खरल क
सातरोज आंखमें सलाईसे लगावै आठवें रोजसे ती
रोजतक उम्दः शरावके फाये आंखपर बांधे चौथे रो
गुलाबका फाया बांधे दस बारह रोजतक और जिया

नजर लगाकर न देखे आराम होगा जाडोंकी मोर करें गरमीमें नही।

अथ नासूरकी दवा नं० १७०.

बकायनके बीज एकसेर थोडे कूटे जांय अरंडके बीज एकसेर, शीशमका बुरादा एक सेर, बकरेके चारों पैरकी नलीकी हड्डी, सबको पातालयंत्रसे रोगन निकालकर लगावे तथा रोगन विलमांकी वत्ती नासूरमें रखनेसे फौरन अच्छा होताहै रोगन सपेद हो।

अथ दवा कुष्ठकी नं० १७१.

अंडी छीलकर १ अंडी सवेरेको खावे दूसरे दिन २ अन्डी छीलकर खावे इसी तरह रोज १ अण्डीबढाता जावे ४० दिनतक ४० अण्डीकरदे और ४१ ईकतालीसवे रोजसे १ अंडी कम करता जावे ८० असीरोजमें यह प्रयोग पूरा होगा. खानेमे चनेकी रोटी और घी खावे मीठा और नोन नही खावे कैसेही कुष्ठहो आराम हो जावेगा और रसकपूरभी खिलाया जाता है उसकी तरकीब आतशककी बीमारीपर लिखी है।

अथ सिरके दरद और पीनसकी दवा नं० १७२.

सिरमें दरद हो और नजला रुका हो पीनसहो और कीड़े पडजांय उसके वास्ते विन्दालका फल लेकर

उसके अन्दरका जाला निकालकर छः मासे पानी पांच सात मिनट भिगोकर मलकर नाकके रास्ते खीं छींक उसी वक्त आवैगी फिर नहीं सूँघे इसीतरह ३ दि तक नाकसे रतूवत निकलैगी ३ दिनतक सूखीदालरोट खिलावै पीनसके कीडे भी निकल जावेंगे और अच्छ होजावैगा और योगक्रिया करनेवालोंके जब गरम दिमागमें होती है तब यही दवा सूँघतेहैं ऊपर लिखेके रीतिसे दिमाग साफ होजाताहैऔर पागलको सुंघानेसे पागल अच्छा होजाताहै और पेटके कीडे पांच फूल पिलानेसे मिस्लपानीके होकर बहि जातेहैं पांच फूल पीस कर बत्ती बना कर सात दफे भगमें रक्खै तब गर्भ गिरजाता है यह विन्दाल किस्म घुसरायनमेंसे है इस पर कांटे होतेहैं यहां भी कहीं कहीं होतेहैं और मथुरा वृन्दावनकी तरफ बहुत मिलते हैं और पेननकिलर अङ्गरेजी दवासे भी दरद जाताहै और रोगन काफूर अजवायनके सतवालेके लगानेसे दरद जाता रहेगा ।

अथ रोगन कपूरकी विधि नँ० १७२.

काफूर और सत अजवायन बराबर लेकर अलहिदा अलहिदा पीसकर शीशीमें भरकर हिलादे सब दोमिन-टमें रोगन हो जायगा बच्चेको माके दूधमें एक कतरा

और तीन कतरा मले जांय तो पसली अच्छी
हो, और हैजेके लियेभी पांच पांच बून्द
पिलावे और जिस्ममें दरद हो तो वहाँ मालिश
हैजेवाला भी अच्छा होजायगा ।

अथ बच्चोंकी पसलीकी दवा नं० १७४.

जायफल दो २ और जावित्री पीपल जायफलके
और कस्तूरी १ एक मासे बंगलापानमें गोली
मूंग बराबर माँके दूधमें बच्चेको खिलावे और
रोगन काफूर अजवायनके सतवाला एक कतरेसे तीन
कतरेतक माँके दूधमें खिलावे और तीनकतरे बीसकतरे
रोगन तिलीमें मिलाकर मालिश करै और हरं अनैसू
अमलतास चार चार रत्तीकी घूँटी बनाकर पिलावे
जिसको दस्त नहीं आताहो तब पसली जाती रहतीहै ।

अथ दमाकी दवा नं० १७५.

गुलाबी सज्जी आधपाव जिसके छोटे छोटे टुकडे
करके आठरोज आकके दूधमें भिगोय रक्खे नवमें
दिन एक मलैयामें इतना आकका दूधभरै जितनेमें
सज्जी डूब जाय फिर कपड मिट्टी करके आठसेर
कंडोमें फूंक देवे खुराक दो मासेसे चार मासेतक घीके
साथ खावे तो दमा जाय ।

अथ सुस्तीकी दवा नं० १७६.

दो जोंक जो नीले रंगकी होतीहै उनको गधेके फोतेमें लगावै जब खून पीकर जोंक गिरे तब उठाकर मुँह बांधकर तीन रोज तक रखलेवे फिर गोखरू छोटे और माजूफल और वीरबहोटी सब जोंककी बराबरलेकर घीगुवारमें पीसकर कपडेमें लगाकर छोटी छोटी वत्ती बनावै छांईमें सुखाकर आतसी शीशीमें भरे. पाताल-यंत्रसे रोगन निकले और धानकी भूसीकी आँच करै शीशीके मुँहमें सींक लगाकर एक नांदमें छेद करके शीशी उलटी रक्खै नांद चूल्हे परर क्खै तले बरतन चीनीका रखदे देखता रहे जब रोगन निकलना बन्द हो तब रोगन निकाल लेवे उसको मलकर पान बाँधे ख्वाब न होने दे उम्मेद है कि सातरोजमें अच्छा हो जावैगा।

अथ जोगराज गूगल वायुपर नं० १७७.

सोंठ मासे ४ पीपल मासे ४ चाव मासे ४ पीपलमूल मासे ४ चीतेकी छाल मासे ४ हींग भुनीमासे४ अज-मोद मासे ४ सरसों पीली मासे ४ जीरा दोनों मासे ८ समालू मासे ८ इन्द्रजो मासे ४ पाढर मासे४ वाय-विडंग मासे ४वच मासे४ गज पीपल मासे ४ कुटकी मासे ४ अतीस मासे ४ भारंगी मासे ४ मूरवा मासे ४

छेलबीजा मासे४ गोखरू मासे ४ त्रिफला मासे १२ गूगलशुद्ध मासे १०० फौलाद तोले ४ वंग तोले ४ चांदीकी भस्म तोले ४ नागेश्वर तोले ४ अबरख तोले ४ मन्डूर तोले ४ रससिंदूर तोले ४ सब दवाई घी लगाकर कूटता जाय जितना जियादः कुटैगा उतना अच्छा होगा खुराक रत्ती १ से रत्ती २ तक अनुपान वैद्यकी रायपर जैसा मौका देखे।

अथ जोगराज गूगल दूसरा नं० १७८.

सोंठ २५ पीपलामूल २५ चाव २५ चीता २५ सरसों पीली २५ काली मिर्च २५ हींग भुनी २५ अजमोद २५ जीरा दोनों ५० रेनुका २५ इन्द्रजौ २५ पाढर २५ गजपीपल २५ वायविडंग २५ कुटकी २५ अतीस २५ भारंगी २५ वच २५ मुरैठी २५ पत्रज २५ देवदार २५ पीपल २५ रासन २५ कूट २५ नागरमोथा २५ सेंधानोन२५इलायची लाल २५ गोखरू२५धनियां २५ हर्र २५ बहेड़ा २५ आंवला २५ तज २५ खस २५ जवाखार २५ मूरवा २५ सबको बराबर लेकर कूट पीसकर कपडछान करले फिर सबकी बराबर गूगल डाले फिर गूगलसे चौथाई घी मिलाकर खूब कूटे जितना जियादः कूटैगा उतना अच्छा होगा।

अथ शिंगरफ वातरोगपर नं० १७९.

शिंगरफकी डली पल ४० सहत पल २४ भिलावेका तेल पल २४ घी गायका पल २४ इन तीनोंको कढाईमें चढावे फिर शिंगरफकी डलीपर भिलावे पल४ पीसकर लगावे जिसमें शिंगरफ छिपजावे तथा मीठा तेलिया पल ४ घीगुवारके रसमें पीसकर उसमें डली धरे फिर डलीको कढाईमें डालदे कढाईको चूल्हेपर धरकर आग वारे पहरतीन जवतकके कढाईका रस सब जल जाय फिर डली कढाईसे निकालकर पानीसे धो डाले तब शिंगरफ सिद्ध हो जायगा खुराक रत्ती १ पानके साथ तथा सहतमें खाये तो सर्व वायु कफके विकार जावें और क्षुधा करे और वीर्यकी वृद्धि होय ।

अथ गोली संजीवनी नं० १८०.

१ वायविडंग	मासे १६	६ आँवला	मासे १६
२ सोंठ	" १६	७ बछ	" १६
३ पीपल	" १६	८ गिलोय	" १६
४ हर्र	" १६	९ भिलावा	" १६
५ बहेड़ा	" १६	१० सिंगिया	" १६

सब दवा कूटकर गोमूत्रमें पीसकर घुंगची बराबर गोली बनाले अदरकके रसके साथ खाय साधारण

बुखारमें एक गोली खाय और सन्निपातमें दो गोली खाय और सांप काटनेपर चार गोली खाय।

अथ सुरमा आंखका नं० १८१.

सीसाको खट्टी छाछमें १०८ बार शोधे और काले सुरमेको कागजीके रसमें ७ सातदिन घोटै तब शुद्ध होगा इस विधिका सुरमा २ तोला और सीसा शुद्ध २ तोला पारा शुद्ध २ तोला मिसरी २ तोला समुद्र झाग २ तोला पहले सीसा पारेकी कजली करे फिर सब चीजोंको मिलाकर चार दिनतक खरल करे फिर इसमें कपूर २ तोला मिलावै सुरमा बनगया सुबह शाम लगानेसे आंखोंको बहुत फायदा होताहै रोसनी आं-खोंकी बढती है कपूर भीमसेनी पडताहै जो ऊपर लिखाहै।

अथ सलाई सीसेकी आँखमें लगानेकी नं० १८२.

सीसा लेकर एकसेर ऽ१ त्रिफलेके काढेमें सो १०० वार बुझावै फिर भाँगरेके रसमें पचास ५० बार बुझा-वै फिर सोंठके काढेमें पचास ५० वार बुझावै फिर घीमें पचास ५० वार बुझावे फिर गोमूत्रमें पचीस

२५ वार बुझावे फिर सहतमें २५ वार बुझावे फिर दूधमें पचीस २५ वार बुझावे इस भाँति सीसेको ३२५ वार बुझावे उस सीसेकी सलाई बनवाले उस सलाईको दिनोंरातमें चार दफे खाली आँखमें फेरै आँखसे पानी आताहो वो बंद हो जावैगा और कभी आँख दुखेगी नहीं और आदमीके बुढ़ापे तक रोसनी आँखकी वैसेही रहेगी कम न होगी और जिसको कम दिखाता हो सलाई फेरनेसे आँखकी रोसनी ठीक हो जायगी ।

अथ लोकसपिस्ता बनानेकी विधि नं १८३.

१ लसोडे	अदद ५०	४ तुख्मखतमी	तोला १
२ उन्नाव	अदर २०	५ पोस्तकाछिकला	तोला२
३ मुरेठी	तोला १	६ बिहीदाना	मासे६

इन सबका काढा करके बूरा आधसेर ऽ॥की चासनी करके सब दवाका काढा चासनीमें डालकर पकाले फिर उपरसे इतनी दवा पीसकर और डालदे जो नीचे लिखी हैं ।

१ बादामगिरी	तोला १	४ कतीरा	मासे ६
२ पोस्तदाना	तोला १	५ गोंद	मासे ६
३ जौ तोला	तोला १	६ मुरेठी	मासे ६

यह लोकसपिस्ता खाँसीको बहुत फायदा करता है ।

अथ आसवद्राक्षादि दूसरा नं० १८४.

१ मुनक्का	पल	५०	१५ बबूरकी छाल	पल	१६
२ किसमिस	पल	१००	१६ महुआकी छाल	पल	८
३ छुहारे	पल	२५	१७ आमकी छाल	पल	८
४ बादाम	पल	२५	१८ जामुनकी छाल	पल	८
५ गोला	पल	१२	१९ खरैटीकी छाल	पल	८
६ गिलोय	पल	४	२० कँघीकी छाल	पल	८
७ गोखरू	पल	४	२१ नलकी जड	पल	८
८ सतावर	पल	४	२२ डाभकी जड	पल	८
९ कौंचकेबीज	पल	४	२३ गन्नेकी जड	पल	८
१० मूसली	पल	४	२४ गोंदनीकी छाल	पल	८
११ मूसलीस्याह	पल	४	२५ धायके फूल	पल	३२
१२ तालमखाना	पल	४	२६ बूरा सपेद	सेर	ऽ।
१३ बीजबन्द	पल	४	२७ गुड	सेर	ऽ५
१४ बेरीकी छाल	पल	४			

इन सब चीजोंको कूटकर एक मटुकामें भर दे और इतनी चीजोंका चूरण करके मटुकामें डारे जो नीचे लिखी हैं।

१ त्रिकुटा	पल	३	४ इलायची सपेद	पल	१
२ त्रिफला	पल	३	५ तज	पल	१
३ पत्रज	पल	१	६ इलायची लाल	पल	१

७ चीता	पल १	१४ अगर	पल १
८ धनियां	पल १	१५ तगर	पल १
९ चोबा चीनी	पल १	१६ जावित्री	पल १
१० मुरैठी	पल १	१७ जायफल	पल १
११ पाषाणभेद	पल १	१८ लौंग	पल १
१२ चन्दन सपेद	पल १	१९ खस	पल १
१३ चन्दन लाल	पल १	२० वालछड	पल १

इन सब दवाओंके तोलसे छै गुणा पानी मटुकामें भरै फिर मटुकेको एक महीना जमीनमें घोडेकी लीदमें गाडै फिर मटुकेको निकाल कर भवकेमें उसका अर्क खींच लेय और इतनी चीजोंकी पोटली भवकेमें डाल दे नीचे लिखी ।

१ केसर	मासे १६	३ कस्तूरी	मासे ४
२ कपूर	" ८	४ धनियां	" १६

खुराक १ तोलेसे ४ तोलेतक सुवह दुपहर शाम तीनवख्त पीवै काम अधिक बढै बंधेज होय मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात प्रमेह दूर होय कास स्वास यक्ष्मा दूर होय वीर्यकी वृद्धि होय अरुचि दूर होय क्षुधाकरै पांडुरोग दूर होय सर्व उदररोग दूर होय और खांसी जिसमें कफ आताहो और स्वांस भी हो उसको वहुत फायदा करता है ।

अथ हुचकीकी दवा नं १८५.

सैंधानोनको पानीमें घिसकर नास दे पानी नाकके रास्ते सुँघावे हुचकी बन्द होजावैगी ।

अथ नारायणी तैल नं० १८६.

असगन्ध पल १० खरेटीकी छाल पल १० बेलकी छाल पल १० पाढर पल १० कटेरी पल १० वनभटा पल १० गोखरू पल १० कंघीकी छाल पल १० नीमकी छाल पल १० अरलूकी छाल पल १० पुनरनवा पल १० पसारणी पल १० अरनीकी छाल १० इन सब चीजों से आठ गुण जल डारे और सबका काढा करे जब चौथाई पानी बाकी रहै तब उतारले और काढेको छानले और सतावर पल ६४ का रस डाले जो रस नहीं निकले तौ आठ गुणा पानी डार कर सतावरका काढा करके डारे और तेल तिलीका पल ६४ डारे और इन सब चीजोंको चूरण करके डारे जो नीचे लिखीहैं बच पल १ चन्दन पल १ कूट पल १ बालछड पल १ इलायची लाल पल १ छारछबीला पल १ सैंधा पल १ असगंध पल १ खरैटी पल १ रासन पल १ सौंफ पल १ देवदार पल १ सालपरणी पल १ तगर पल १ पृष्ठपरणी पल १ माषपरणी पल १ मुद्गपरणी पल १ इनको महीन कूट पीसकर डारे और दूधगायका सोलासेर।८६

डारै काढे और तेल और चूरण और दूध सबको कढा-ईमें डारकर आगपर चढादे मंद मंद आँचसे तेल पका ले फिर तेलको छानकर बोतलमें भरले जिसममें लगावें, तो वात विकार सर्व जाँय पक्षाघात जाय संधि संधिकी पीडा जाय क्षीण पुरुष पुष्ट होय स्त्री प्रसूति जाय वाँझ स्त्री पुत्रवती होय ।

अथ लोहा आसव नं० १८७.

लोहा चूरण पल ४ त्रिकुटा पल १२ त्रिफला पल १२ अजवायन पल ४ चीता पल ४ वायविडंग पल४ नगरमोथा पल ४ सहत पल ६४ गुड पुराना पल सौ १०० सब दवाइयोंको चूरण करके बीस सेर ॥ऽ पानीमें सब डारदे एक महीना १ दस दिन १० जमीनमें गढा खोदकर घोडेकी लीद भरकर उसमें मटका गाडदे फिर मटकेको निकाल कर अर्कको छानले प्रातःसमय १ पल पीवे तो अग्नि तीव्रकरे पाँडु सोथ गुल्म पलीहा स्वाँस कास भगंदर अरुचि संग्रहणी इन सब रोगोंको दूर करता है ।

अथ अर्कबेलनं १८८.

बेल कच्चेका गूदा निकालकर काढा करके अर्क भबके में खेचले तथा बेल पकेका काढा करनेकी जरूरत नहीं है गूदेको पानीमें घोलकर उसका अर्क खेंच ले यह अर्क पेचिसके दस्तोंको बहुत फाइदा करता है खुराक १ तोलेसे २ तोले तक ।

७ फिटकरी सपेदका फूला	तोला ६	१० समुन्दरफेन	तोला ६
८ नौसादर	तोला ६	११ मूजकी राख	तोला
९ सोरा	तोला ६	१२ सुरमा	तोला

सुरमाको अलहदा खूब महीन पीसले और सोराको अलहदा खूब महीन पीसले और सब दवाईको अलहदा पीसकर कपडछान करके उसमें सुरमा और सोरा मिलाकर फिर सबको खूब महीन सुरमाकी तरह पीसकर रखले रातको सलाईसे लगावे जाला व धुंध व फूलीको बहुत फायदा होगा ।

अथ बच्चोंकी संग्रहणी तथा बुखारकी दवाई नं० १९२.

१ हलदी	मासे ६	४ गजपीपल	मासे ६
२ देवदारु	मासे ६	५ पृष्ठपर्णी	मासे ६
३ कटेया	मासे ६	६ सौंफ	मासे ६

सब चवाको कूटछानकर थोडेसे पानीमें पीसकर उड़द बराबर गोली बनाले १ गोली शामको १ गोली सवेरेको सहतमें खिलावे बहुत फायदा होगा ।

इति खूबचन्दचिकित्सा समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस-मुंबई.

लाला खूबचन्द पीरोंभोन पो० पी०